

શ્રીમહા બુદ્ધિસાગરજી અન્થમાત્રા અન્થાંક (૪૫).



જૈનોપનિષદ્.

કાર્તો.

યોગનિષિ શાસ્ત્રનિશારદ જૈનાચાર્ય બુદ્ધિસાગરસૂરિજ.

છપાવનાર

શાસ્ત્ર મૂલજીરામ જગળજવનદાસ.

માંગરોળ નિવાસી.

પ્રકાશક

અધ્યાત્મમજાનપ્રસારક મંડળ તરફથી

શાસ્ત્ર લખાલુભાઈ કરમચંદ દલાલ.

ગ્રામગલી—મુંબાઈ.

વીર સં. ૨૪૪૩.

પ્રત ૨૦૦૦.

વિકલ સં. ૧૯૭૩

શ્રીમહ યુદ્ધિસાગરજી અન્થમાલા અન્થાંક (૪૫૦)



જૈનોપનિષદ્

શ્રીગનિષ્ઠ શાસ્ત્રવિરોદ્ધ જૈનાચાર્ય યુદ્ધિસાગરસૂર્ય.

છપાવનાર
શા. મૂલજીરામ જગળવનદાસ.
માંગરોળ નિવાસી.

પ્રકાશક
અધ્યાત્મજ્ઞાનપ્રસારક મંદળ તરફથી
શા. લદ્ભુભાઈ કરમચંદ દલાલ.
ચાંપાગલી—સુંધારી.

વીર સં. ૨૪૪૩.

પ્રત ૨૦૦૦.

વિકિમ સં. ૧૬૭૩

વડोદરા-શિયાપુરામાં, લુહાણુભિન્ન રીતમાં પેર.માં, વિહૃતભાઈ આશારામ કક્ષને,
તા. ૧૨-૬-૧૯૧૭ ના દેન મજારાદને માટે જાપી પ્રસિદ્ધ કર્યું.

निवेदन

आ अन्यमालाना पिस्तालीश भूष्मिका तरीके जैनोपनिषद् नामने द्वारा
पशु उपयोगी अन्य जैनोना करकभलाना द्वारा केवल भावे छे. जैनोप-
निषद्हने जैन ऐडीजीभावां, जैन शास्त्रानामां, जैन गुरुद्वारानामां चयन तरीके
चलाववानी ज३३ छे. मूल सूत्रोपर भविष्यां, विरक्तां विकेतां, विवरण
भविष्यां ज३३ स्वीकारवाभावां आवे छे. जैनोने स्वधर्मान्विभावां, स्वसंहारां, स्वप्रत्यक्ष
प्रगटाववाने जैनोपनिषद् अत्यंत उपयोगी छे. आ पुस्तक छपाववाभावां
भांगरोगना जैन आवक था. मूण्डुभाई जगल्लवनद्वासे ३. १२०) नी
भद्द ठरीने जैनधर्मनी लागणीने सतेज करी छे. भाई मूण्डुभाईना पिता
जगल्लवनद्वासे जैनाचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि पासे दीक्षा दीधी छे अने तेमतुं
श्री जयसागरजी ऐतुं नाम राख्युं छे. सुश्रावक मूण्डुभाई जैनधर्मनी
सेवा भाटे जैनधर्मनां अनेक पुस्तको छपाववा भाग्यशाणी अनो एम
धृष्टी तेमने धन्यवाद आपवाभावां आवे छे. जैनो आ जैनोपनिषद्हने वांची
जैनधर्मनी उन्नतिनां कार्यो करो.

ले० अद्यात्मज्ञान असारक अंडण。
मुख्याई चंपागली.

प्रस्तावना.

जैनो जैनधर्मनी तथा जैनोनी प्रगति करे अने आ हुनियाभावां सदा
आहोअलाली लोगने ऐवा उद्देश्यी जैनोपनिषद् लभवाभावां आवी छे. जैनो-
पनिषद्हाभावां लभेला विचारो प्रभाषे जैनो प्रवर्ती. जैनो जैनत्वनी इज्जेने
अदा करी यावत् भोक्त्वार्गनी प्राप्ति करो. उपर्युक्त उद्देश्यानां सत्त्ववन सत्रोने
स्वरणु करीने जैनो जैनधर्मता तो पुनः तेच्यो जैनकोभनो उद्घार करी
शक्शी. जैनशीता नाभतुं पुस्तक के जे गच्छमत प्रभाष्याभावां छपायुं छे ते
अने आ जैनोपनिषद्हने जे जैनो वांच्यो अने ते प्रभाषे जे जैनो प्रव-
र्ती तो नक्की जैनकोभनो पुनरुद्घार थवानो. जैनशासन देवो जैनोने
जैनकोभनो पुनरुद्घारपर्यानी बुद्धि आपो अने जैनोने धर्मोन्नतिभावां साहा-
यक अनो एम धर्मचत्वाभावां आवे छे. अङ्गशान्ति:

सुकाम गैथापुरो.
प्रथम भाद्रपद वाद ८ } }

ले० बुद्धिसागर.

ॐ ॐ अर्हम्

अथ जैनोपनिषद्.

जिनस्योपासकाः

ने भगुणो, जिनदेव तीर्थं कर परमात्माना उपासको, सेवको, भक्तो
छे ते जैनो कहेवाय छे. श्रीजिनेश्वर सभवसरणुमां ऐसीने यतुमुझे देखना
हे छे, भाटे ते सर्वशब्दीतरागच्छाक हेवाय छे. रजेण्यु, तमेण्यु अने
सत्प्रशुणुनी पेली पार गयेला हेवाथी श्री जिनेश्वरो, तीर्थं करो ॥४॥ अहंदेव
महेश्वर जाणुवा. केवलज्ञानाथी श्रीसर्वज्ञजिनेश्वर सर्वव्यापक हेवाथी
ते विष्णु गण्युय छे. सुभना कर्ता हेवाथी जिनेश्वर शंकर छे. सदाशिवमय
अर्थात् सदा कल्याणमय श्रीतीर्थं कर अरिहंत हेवाथी ते सदाशिवमहे-
वाय छे. सर्वज्ञवोने तेआ ते धर्मां ऐच्ये छे भाटे ते कृष्ण कहेवाय छे.
सर्वज्ञवोनां पापोने हो छे भाटे ते हरि कहेवाय छे. शानावरस्थीयाहि
सर्वकर्मोने हस्याथी श्रीजिनेश्वर परमात्माज हर कहेवाय छे. संपूर्ण
लत्त्वोना ते शाता हेवाथी ते श्रीजिनेश्वर भूम्ब कहेवाय छे. सर्वविक्षमां
ते समर्थ हेवाथी ते विश्वेश्वर कहेवाय छे. वसु अर्थात् पृथीना ते हेव
हेवाथी वासुदेव कहेवाय छे. सर्वविक्षवित्तिभक्तोनां हृष्यमां ध्यानवडे
रभी रहेला हेवाथी ते राम कहेवाय छे. एवा जिनेश्वरना भक्तोने,
उपासकोने, जिनेश्वरना ने रागी छे तेआने जैन कहेवाय छे. जिनदेवना
पर ग्रेमरागने धारणु करनारा भगुणोने जैन कहेवामां आवे छे. श्री जिने-
श्वर प्रकृष्टे उपहिंष्ट सहविचारोना अने सदाचारोना ने उपासक छे ते
जैनो छे. श्री जिनेश्वरनी आशा प्रभाषे हुयुणोने अतवा प्रयत्न करे छे ते
जैन छे. ने हुर्णितापर ४५ मेणे छे अने सर्व प्रकारना शुभ ४५
मेणवाय एवा शक्तियोने ने प्राप्त करे छे ते जैन छे. ने जिनेश्वरना युणोने
उपासे छे ते जैन छे. ने जिनेश्वरनी उपासना करवामां रक्त छे ते जैन
छे. ने जिनदेवनी पूर्ण श्रद्धा धारणु करे छे ते जैन छे. ने भगुण
जिनदेवना कला प्रभाषे श्रुत धर्म अने चारित्र धर्मोनो यथाशक्ति उपासक
एते छे ते जैन छे. जैनो केवा हेवाय छे ते ज्ञानवे छे.

जिनवचनद्वाः

गुणुकर्मातुसारे आहंशु लोय, क्षत्रियो लोय, वैश्यो लोय अने शद्रो
लोय, परंतु जेओ। जिननां वयनोने जाणु छे अर्थात् जिनदेवे कडेलां
तत्त्वेने जेओ। जाणु छे अने तथी जिनदेवपर रागभाव धारणु करे छे
ते जैनो छे। शज्जिनेश्वरकथित आगमनिगमोने ने वांचीने अगर सांख-
णाने जाणु छे, अने तेनो छट्यमां विचार करीने सत्यना रागी बने छे, अने
असत्यनो त्याग करे छे ते जैनो जाणुवा। जिनेश्वरनां वयनो प्रभाणे ने
यथाशक्ति वर्ते छे अने जिनेश्वरनां उपदेशने जेओ। भान्य करे छे ते जैन
छे। अद्वा विनातुं शान ते शान गणातुं नथी। श्री जिनेश्वरनां वयनोतुं
धण्डाकालपर्यांत गुरुगम पूर्वक मनन करवानी तेतुं सत्यशान थाय छे
अने तथी जिनवयनस ऐवुं ने सूत्रमां कठ्युं छे तेनो अनुभव आवे छे।

जैनधर्मसंस्कारधारकाः

जेओ। जैननिगमोमां कडेला संस्कारो पैझी पोताना योग्यसंस्कारोने
धारणु करे छे ते जैनो छे। आहंशु, क्षत्रिय, वैश्य अने शद्रो पोताना
योग्यग्रहधर्मसंस्कारोने धारणु करे छे। गर्भाधानादिसंस्कारोथी ने संस्कार-
रित थयो लोय छे तेनामां जैनत्व प्रकाशी शडे छे। जैनशास्त्रोमां सोण
संस्कारोतुं वर्णुन करवामां आव्युं छे। विचार पूर्वक संस्कारोनी करण्याथी
आत्मापर असर थाय छे। गर्भामां रडेला भनुष्यने धार्मिकसंस्कारो आध्या-
विना वास्तविक रीत्या जैनोनी प्रगति थए शक्ती नथी। गृहस्थयोग्यसंस्का-
रोने गृहस्थयुइ करावी शडे छे अने तेथी भडान् जैन प्रगटावी
शकाय छे। जैनधर्मपर पूर्णु अद्वावागो गृहस्थयुइ अंगीकार करवो जेइओ。
गृहस्थयुइ पायु जैनधर्म शास्त्रोना भान्त्रसंस्कारोथी संस्कारित लोवो जेइओ。
आहंशु, क्षत्रियो, वैश्यो अने शद्रो पोतपोताना गुणुकर्मातुसारे वर्तीता
छतां जैनधर्मसंस्कारोने धारणु करी शडे छे। गुणु कर्माथी अष्ट थेल
आहंशुदि वर्णु जैन धर्मने परंपराए वडावी शक्ती नथी। संस्कारभान्त्रोने
पूर्णु अद्वावो गणुवा जेइओ उ जेथी धार्या प्रभाणे इल थाय। जैनधर्मोनो
पुनर्जीव करवाने गृहस्थजैनाहंशु, क्षत्रिय, वैश्य, शद्रोमे स्वयोग्य-
संस्कारोने धारणु करवा जेइओ। गृहस्थथाहंशुजैनो जैनशास्त्रो प्रभाणे
सम्पूर्त्व प्रतादिक अंगीकार करी ते गृहस्थयुइ अती ने अन्य क्षत्रियजैनो,

जैनोपनिषद्.

३

विश्वजैनो अने शर्दूलजैनोने धर्मसंस्कारो करानी शके छे. जैनथात्मा-
जैने सम्यक्ततादि संस्कार करावनार लागी जैनधर्माचार्यो जाणुवा, गुहस्थ
जैने अने त्यागी एवा साधुओनो स्वयोअधर्मसंस्कारोने धारणु केवी रीते
वर्ते छे ते जाणुवे छे.

जिनाज्ञापालकाः

श्रीजिनेश्वरनी आगामोने पालन करनारा होय ते जैनो अबभोधवा.
जैनागमोमां श्रीजिनेश्वरनी आगामो छे. गुहस्थ जैनोजे अने मुनिराजोजे
अधिकारप्रत्येके जिनाज्ञामो पाणवी जेधजे. जिनाज्ञातुं केवी रीते पालन
करवुं तेतुं जैनाचार्यो पासेथी जान भेणववुं जेधजे. जैनाचार्य स्वयुह
जाणुवा. तेओ जैनथात्मोना अतुलनी होय छे तेओ योऽय जुवने योऽय
आगा दर्शवे छे. जैनाचार्यनी आगामां जिनाज्ञामो समाधि जय छे. कारणु
उ जिनलगवान्ता पद्धते जैनाचार्यो होय छे. तेओ वर्तमानमां ने कंध
धर्मोन्नति भाटे करे छे ते जिनाज्ञाथी बिन्न नथी. जिनाज्ञापालकजैनोवडे
विश्वतुं कल्याणु करी शकाय छे. जिनाज्ञापालको अवश्य मुक्त बने छे.

जैनसंख्याद्वद्धिकराः

जेवा प्रतिदिन धनमण्ठी, उपदेशमण्ठी, साहायक अण्ठी, विद्य-
मण्ठी, जैनोनी संभ्यामां वृद्धि करनारा होय छे ते सत्य जैनो जाणुवा.
जैनोनी संभ्यामां वृद्धि थाय ते भाटे ने ने सुधारा करवा धटे ते करवा
अने जैनोमां शुद्धकुद्दो स्थापवां. यारे वर्षुमां शुणुकर्मानुसारे नवा जैनो
भनावी संस्कारथी गोठववा. मुक्ति पाभवा भाटे जेट्टी काणल राखवामां
आवे तेना करतां अनंतयुणु बण अने अनंतयुणु आत्मकोग आपाने
ने ने उपायो लेवा धटे ते ते लधने जैनोनी संभ्यामां वधारो करवे. जिनमां
अने जैनमां अलेह भानीने जैनोनी संभ्या वधारवाथी अरा जैनो अनावी
शकाय छे. जैनोनी संभ्या वधे एवी रीते पूर्वाचार्योनी घेडे वर्तमानकालीन
जैनाचार्योजे वर्तमान संभोगोने अनुसरी उपायो लेवा. गुहस्थजैनोमां मुम्प
आरबोर्णी राख्नी अने तेना उपभोगोने मुम्पलेहोमां समावी देवा. जैन
आलज्जोने, गर्भीधान, सीमंत, नाभकरण, लग्न वगेरे संस्कारो कराववा भाटे
धनती मद्द करवी. तथा तेओनी आलविका याले एवी क्षत्रियादि वषेष्यो

व्यवस्था कर्वी. ने जैनधाराहेणा जैनोनी संघ्या वधे एवा उपायो लेता होय तेजोने, नवा थनार जैनोमे गुहस्थगुह तरोके भानीतेजोनी पूल करवी तथा तेजोने जमाडा अने तेजोने आज्ञविकाना साधन बांधी आपवां. जैनो-आयोमे जैनगुहस्थ युज्खाहेणोने सम्प्रक्त्वाहि संस्कारथी संस्कारित करवा अने जैनगुहस्थधाराहेणोने जैनोनी नवीन संघ्या वधारवाना कार्यभां योजवा. जैनधाराहेणोमे जूतोपवित वगेरे गृहसंस्कारोने जैनगुहस्थ आहण्युह मारहत कराववा. आचारहिनकर वगेरे अन्योभां जैनसनातनवेद भंगोनो विस्तार करवाभां आयो छे, तेमाथी भंगोनो अधिकार जोध देवो. ने जैनधाराहेणो. ने ने जनता नवीन जैनो अनावे ते ते जनता ते ते गुहस्थधाराहण्युगुहयोने. स्थापवा अने ते जनता लेडा परपराये ते ते जैनधाराहण्युगुहस्थगुहने धनादिकी साहाय करे अने गृहसंस्कारो तेनी पासे करावे. जैनाचायो, उपाध्यायो, साधुओमे अने सत्ताधिकारी जैनो-ओ जैनोनी संघ्याभां वृद्धि थाय तेवा वर्तमानकालानुसारे उपायो योजवा. ए हजार वष्टे पूर्व जैनोनी संघ्या याणीशक्तोऽभनुयोनी हुती. हाल जैनोनी संघ्या तेरलाभनी थाय छे भाटे हुवे व्यारनिदाभां सुध रही जिन-आज्ञानो लेप न करतां उपर्युक्त प्रकारे जैनोनी संघ्या वधारवाभां नवीन थता जैनोने सर्व प्रकारनी महद करवी. आर्थिकस्थिति, कन्याप्रदान वगेरे व्यव-हासिक्लाबोवडे जैनोनी संघ्या वधारवी. जैनधर्मना उपहेशभन्यभठारोथी जैनोनी संघ्याभां गमे तेवा उपायेथी वृद्धि करनारा भरा जैनो जाणवा. जैनधर्मनो प्रयार करवाथी हुनियाभां जैनोनी संघ्याभां वृद्धि थाय छे, ते नाचे प्रभाषे सूनथी कथवाभां आवे छे.

जैनधर्मप्रचारकाः

जेझो भरा जैनो छे तेजो जैनधर्मनो विश्वभां प्रयार करनारा होय छे. श्रीआर्यसुहस्तिसुरिये भंप्रति राज्यमे, क्षेत्रजना आभेव राज्यमे भप्पभिस्तुरिये, विहारहेशना भारवेल राज्यमे, कुभारपाल राज्यमे, शेखुक राज्यमे, डेखुक राज्यमे जैनधर्मनो प्रयार करवाभां भाभी राखी नहोती. कुलिकालक्ष्मीज्ञात्रिहेमयद्रायायेऽ जैनधर्मनो प्रयार करवाभां आत्मवीथने सारी रीते स्त्रैरव्युहतुः. शक्तिथी, विद्याथी उपहेशथा अने धनयो जैनधर्म-नो प्रयार करवी भाटे संकलसधे जरा भान्र पर्ण भाभी न राखवी जोधयो.

જૈનાપનિષદ્.

૫

શ્રીનિનહાતસુરિએ, રત્નપ્રભસૂરિએ જૈનધર્મ વૃદ્ધ માટે અસરકારક આત્મભોગ આપો હતો. દરેક જૈન જૈનધર્મનો પ્રચાર થાય એવા વિચારો કરોણ કરવા અને યથાશક્તિ પ્રવાતિ કરવી. જે ભડાલ માયકાંગલા જૈવો છે તે જૈન નામ ધરાવીને દેખુણે લંજવે છે. હુનિયામાં જીતનારાઓ જૈનો હોય છે તેઓ કદાપિ પાછળ પડેજ નહીં. નગુરા અને નગુણા છે તે જૈનધર્મનો પ્રચાર થાય એવાં કાર્યેના પ્રતિપક્ષી બને છે અને જૈનધર્મ પ્રચારનાં કાર્યેભાં વિદ્ધ નાખે છે, પરંતુ જીતનારા જૈનો તેઓને ગણુકારતા નથી. તેઓ જૈનધર્મનો પુસ્તકોદારા, શુક્રાદારા પ્રચાર કરે છે અને ભરીને સ્વર્ગમાં દેવો બને છે. અન્યધર્મોપર અને અન્યધર્મ પાળનારાઓપર દ્વૈષ ધારણું કરવાથી જૈન ધર્મનો પ્રચાર થતો નથી, પરંતુ અન્યધર્મનાં જે જે સત્યો છે તેનો જૈનધર્મમાં સમાવેશ થાય છે, જૈનધર્મમાં અન્યધર્મનાં સત્યો રહેલાં છે. એવા એધનો સત્ય રીતે પ્રચાર કરવાથી તથા અન્યધર્માઓના પોતાના આત્માના કરતાં વિશેષ માનીને તેઓના દુઃખમાં ભાગ લેવાથી તથા તેઓને સુખમાં સાહાય્ય આપવા પૂર્વિક જૈનતત્ત્વોનો બોધ દેવાથી તેઓના આત્માઓભાં જૈનધર્મ ઉત્તરે છે. ગ્રેમ, સાહાય્ય અને મૈત્રીથી મહુષ્યોના હૃદયમાં જૈનધર્મનાં જીવતાં સત્યોને ઉતારી શકાય છે. કુમારપાળના ઉપર હેમાચાર્યે જે ઉપકાર ન કર્યો હોત તો કુમારપાળ જૈન થાત નહીં. આર્થસુહસ્તિએ શ્રી સંપ્રતિ રાજાપર ઉપકાર ન કર્યો હોત તો સંપ્રતિરાજી જૈન બનત નહીં. આત્મ સમર્પણું કરીને અન્યોને પોતાના ધર્મમાં લેછ શકાય છે. જૈનકોભમાં આવવાથી આર્થિકલાભ થાય, વિશાળભાવના ખીલે, એકખીનમાં લેદ ન રહે, પરસ્પરમાં ગ્રેમ ખોલી શકે. સુધી થવાના સર્વ ઉપાયોની સાહાય્ય મળે તોજ આ કાળમાં જૈનધર્મના પુનરદ્ધાર થાય. જૈનધર્મની જીવતી મૂર્તિ અન્યા વિના જૈનધર્મનો પ્રચાર કરી શકતો નથી. શુષ્ણ વાતો કરવા આત્મથી કંઈ વળતુ નથી. ચારે પ્રકારની વર્ણનાં ગુણકર્મોની જેમાં અસ્તિત્વા નથી તે ધર્મ હુનિયામાં જીવી શકતો નથી. હાલમાં ચાલતા જૈન ધર્મમાં આહારું, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય અને શુદ્ધ એ ચારે પ્રકારની વર્ણનથી તેથી જૈનધર્મ હુનિયામાં જીવી શકશે કે કેમ? તેની શાંકા છે, પરંતુ એકચીશ હળવ વર્ણપર્યાંત હુનિયામાં જૈનોતું જેર પ્રવર્તિવાતું છે અને તે માટેજ જૈનધર્મભ્રયારના. ઉપાયોને દેવતાઓ સુનાહે છે, આત્માની શુદ્ધયુદ્ધમાં તેનો પ્રતિબાસ થાય છે, માટે જૈનધર્મનો પ્રચાર કરવા માટે ચારે વર્ણમાં જૈનધર્મ જીવતો રહે એવા ઉપાયો આદરબા. જૈનધર્મભાંથી બ્રહ્મ થયેલ

યારેવણુંના મતુષ્યોને જૈનધર્મની બનાવવા. દરેક વણુંના મતુષ્યો પોત પોતાના ગુણુકર્માનુસારે આજલિકાદિ સાધનોમાં પ્રવાત થઈ જૈનધર્મ પણે તની તેમના અધિકાર પ્રમાણે બ્યવસ્થા કરવી. ખીરિતધર્મ વગેરેમાં દાખલ થયેલા મતુષ્યોને પ્રાચીશ્વર આપી જૈનધર્મભાં દાખલ કરવા. એવા સત્યકાર્યધર્મનું પાલન કરવામાં કહિ પ્રાણુંને પણ પરાજુસુખ થશું નહીં. જૈનધર્મનું શિક્ષણ અપાય એવાં ઉપહેઠકોનાં શુરુકુલો સ્થાપવાં. જૈનધર્મના પ્રચાર કરનારા આચારોનાં મંત્રો યોજવાં. જૈનધર્મની શક્તા અને તેના સુષ્પ્યપાલન કરવા યોજ્ય આચારોપર લક્ષ્ય આપવું. યારે વણુંના જૈનોને એક બાપારી જૈનોના કર્મ પ્રમાણે દોરવવા નહીં. કન્યાદાન, લક્ષ્મીદાન, સત્તાદાન, પ્રેમદાન, પરોપકારમાં સ્વાર્પણુણુંન, અહિયયુલાદં શુરુકુલસંસ્થાએ. વગેરેથી જૈનધર્મનો પ્રચાર કરવા હાલમાં યોજ્ય ઉપાયો આદરવા અને રહિના બંધનો કે નેથી જૈનોની વરતી ધરી હોય તેઓને જલાંજલિ આપવો. ધર્મની પ્રેમ અત્યત ભીલવવો જોઈએ. ગમે તે જાતનો નમસ્કારમંત્રનો જાપ કરનાર જૈન હોય તો તેના માટે આત્મસમર્પક પ્રેમ ધારણું કરીને રહેણીમાં દેખાડી આપવો. લાઘ્યો કરોડો રૂપિયાનો ખર્ચ હવે નકારો ન થાય અને જૈનધર્મના પ્રચારાર્થે જૈનશુરુંદોના, સાંધુ શુરુકુણો વગેરેમાં ખર્ચ થાય એવી બ્યવસ્થા કરવી કે નેથી જૈનધર્મનો પ્રચાર કરીને જૈનો કર્તાબ્યથી જૈનો અને.

જિનાગમનિગમસ્વાધ્યાયાદિતત્પરા:

દરેક તીર્થાંકરના ઉપહેઠથી જિનાગમોને ગણુધરો બનાવે છે અને ભરત અકૃવર્તિના બનાવેલા વેદોને નિગમો કહેવામાં આવે છે તે સર્વ તીર્થાંકરના સમયમાં પરંપરાએ વલાં કરે છે. જૈન ઉપનિષદો અને જૈન આયુર્વેદોનો નિગમમાં સમાવેશ થાય છે. આગમશાસ્કો અને નિગમશાસ્કો એ અનેના મેળથી જૈનશાસન ચાલ્યા કરે છે. એકલા આગમોથી જૈનશાસન પ્રવર્તાનું નથી તેમ એકલા નિગમોથી જૈનશાસન પ્રવર્તાનું નથી. આગમોના નાશની સાથે જૈન ધર્મનાં તત્ત્વોના નાશ થાય અને જૈનનિગમોના નાશથી યારે વણુંભાંથી જૈનધર્મના આચારોનો નાશ થાય. માટે અનેમાંથી એકનો નાશ ન થવો જોઈએ. જૈનોએ આગમોનો અને નિગમોનો સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ. તથા તેઓનું મનન, સમરણ, નિહિદ્યાસન કરવું જોઈએ. મંત્રોના સર્વ વિભાગ, સોણ સંસ્કારના મંત્રો વગેરે યુક્ત આચારહિન્કરમાં આપેલો છે તે નિગમોનો સાર

जैनेपनिषद्.

१७

संरक्षता योग्य तथा आदरवा योग्य छे. निगमेनी प्रवृत्तिथी चारे वर्षभां जैनधर्मनी दृढ़ता थाय छे. आगमनिगमनो पार पामनार सानी कहेवाय छे. आगमनिगमार्घ्यांजैनर्घमप्रचारोमवति ॥ जैननिगमेभां कहेला सोण संस्कारोने वर्तमानकाळभां सुधारा वधारा सावे जैनेभां प्रवर्तीवनाथी जैनेभां अद्वात्मत्वतुं न्वेर वृद्धि पाम्यु अने पामरो. आगम प्रभावक गम्छेनी पूर्वे उत्पत्ति थमेही हेघवाभां आवे छे. हालभां जैनेभांआगम अने निगमनी प्रवृत्ति वला करे छे. जैनेतर लोडा पशु जैनवेद भिन्न वेदो-उपनिषदोने भाने छे. जैन आगमो अने जैननिगमेभां सर्व प्रकारनां तत्त्वे भरेलां छे. पूर्वे चैत्यवासीभां सुख्यतया जैननिगमेनी प्रवृत्ति हली. जैनागमेथी अविद्युष्मणे ने ने जैनउपनिषदो होय, श्रुतियो होय तेने सापेक्षदृष्टिये जैने अही शके छे. जैननिगमेनी प्रवृत्तिथी राजकीय जैनधर्म होतो अने तेना प्रयारथी अविष्यभां राजकीय जैनधर्म थरो. आगमेनो अने निगमेनो प्रकाश करवाथी तथा प्रयार करवाथी जैनधर्मनी भहतानो लोडेभां घ्याल प्रयारी शकाय छे भाटे जैनेए परस्पर अविद्युष्मणे परस्पर सापेक्षदृष्टिथी भन्नेनो स्वाध्याय करवो. कराववो अने तेना स्वाध्यायाहिना प्रयार भाटे साधु युरुकुदो वगेरेनी स्थापना करवी.

चतुर्विधसङ्घभक्तिकराः

जैनेना चार भेद घडे छे. साधुओ, साधीओ, गुहस्थआवडो अने गुहस्थआविकाओ, आ चार प्रकारना संघनी भक्ति करनारा जैतो होय छे. जैनेना चतुर्विधसंघ भहापूज्य अने तीर्थ करने पशु वंध छे. चार प्रकारना संघनी रक्षा करनी ते भक्ति छे. चार प्रकारना संघने आहार पाणीथी पोषवो ए पशु एक जातनी भक्ति छे. चार प्रकारना संघने वत्वादिकुं दान करवुं ते पशु भक्ति छे. संघ पर आवेलां संकटो हूर करवां, संघनी पडती दहानो उद्धार करवो, संघभां ग्रानदर्शनयारित्रो प्रयार करवो. संघभां प्रवर्तीही अव्यवस्थानो नाश करवो. चतुर्विधसंघनुं अण वधे, शक्ति वधे एवां कर्मो करनां तथा एवा उपदेश देवो, चतुर्विधसंघनी संभ्यानी वृद्धि थाय एवा उपायो. आदरवा, चतुर्विधसंघनो सर्व देशोभां उत्पाद थाय एवा उपायो लेवा धत्याहि प्रवृत्तियोनो भक्तिभां समावेश थाय छे. विष्णुकुमारे नमुनि प्रधानने हठानी भहांसंघनी भक्ति करी. कालिकायार्ये गर्दभलिल

<

જૈતોપનિપદ.

રાજને પરાસ્ત કરી મહાસંધની ભક્તિ કરી. ધર્ત્યાદિ હળવે દષ્ટાતો મોજુદ
છે. જેનામાં ચતુર્વિધસંધની ભક્તિની લાગેણી નથી તે જૈન નથી. મુસલમાનો
જેમ દિનના નામે પ્રાણું આપવા તૈયાર થાય છે તેમ જેણો. ચતુર્વિધસંધની
ભક્તિમાં જિનનાનામે પ્રાણું આપવા તૈયાર થાય છે તેણો. ખરા જૈન બની શકે
છે. આવક્તા-આવિકાસંધની ભક્તિ માટે નવકારશી વગેરે જે રીવાળો હાલ
હૃદાત હોય તેનો કદમ્બિ નાશ ન થવો જેઠાં. નવકારશી સંધ જમણુ
વગેરે ભક્તિ-પ્રથમિથી જૈનકોમાં એકાં વૃદ્ધિ પામે છે. ચતુર્વિધસંધ એ
પચ્ચીશમે તીર્થ્યકરણ છે. જીવતા તીર્થ્યકરણ ચતુર્વિધમહાસંધની ભક્તિ
કરવાથી જૈનો તીર્થ્યકરકુમાર આધે છે અને સ્વર્ગ સિક્કિને પામે છે.

દેવગુરુસેવારસિકા:

દેવશુરુના સેવારસિકનોનો આત્માની શક્તિયોને ખીલની શકે છે.
હળવે ઉપાયે દેવશુરુની સેવા કરી શકાય છે. દેવશુરુની સેવા કરવાથી સમ્ય-
કૃતની શુદ્ધિ કરી શકાય છે અને અનેક મનુષ્યોને સમ્યક્તલ પ્રાપ્તિમાં નિમિત્ત-
ભૂત બની શકાય છે. દેવશુરુસેવારસિકનોનો બને ત્યાં સુધી દરરેણ
પ્રભુનાં તથા શુરુનાં દર્શન કરને ખાય છે અને દેવશુરુની પૂજા કરીને
આત્માની શુદ્ધિ કરી શકે છે. શુરુની સેવા-ભક્તિ કરવાથી ગ્રાનદર્શનચિત્રની
પ્રાપ્તિ થાય છે. તથા શુરુની કૃપા મેળવી શકાય છે. શુરુની કૃપાથી જૈનો
નયણું નયારા બની શકતા નથી. શુરુના હૃદયમાં પરમાત્માનો વાસ હોય
છે તેથી શુરુની કૃપામાં પરમાત્માની કૃપાનો પણ આત્મકાય થાય છે.
શુરુના હૃદયમાં પરમાત્માનો વાસ હોવાથી શુરુની કૃપા એ પરમાત્માની કૃપા
અવભોગની. શુરુકૃપા વિના કોઈ મનુષ્યોક્કળ્ય પરમાત્મપદનેપ્રાપ્ત કરી શકતો
નથી. જેનાપર શુરુની કૃપા થઈ તેનાપર પરમાત્માની કૃપા થઈ એમ
નિશ્ચય છે. શુરુસેવામાં જેને રસ પડે તે શુરુની કૃપા મેળવીને પરમાત્માની
માનસિક, વાચિક, કાચિક સેવા કરી શકે છે. શુરુની કૃપા મેળવવા માટે
સહશુરુના આત્માની સાથે પોતાની અલેટા કરવી જેઠાં. જેના વિચારોક્લષ્ટ
ક્ષણોસ્વચ્છદથી શુરુપરથી ભાવ બહલાયા કરે છે તે શુરુની સેવામાં રસિક બની
શકતો નથી, અને આ કાળમાં શુરુની સેવા વિના પરમાત્માને ઓળખા
શકતા નથી. જે શુરુની સેવા કરી તેમની કૃપા મેળવે છે તેના હૃદયમાં
પરમાત્માનો સાક્ષાત્કાર થાય છે.

જૈનોપનિષદ્ધ.

૫

ચતુર્વર્ણગુણકર્માત્મકારેણ ધર્મારાધનતત્પરાઃ

ચારવર્ણનાં ગુણુકર્મો જે જે શાસ્કેમાં પ્રતિપાદન કર્યો છે, તે ગુણ-કર્માત્મકારે વર્ત્તાં છતાં ધર્મની આરાધનામાં જેઓ તત્પર રહે છે તેઓ જૈનો કહેવાય છે. ગુહસ્થાવાસીમતુષ્ટોઽમે સ્વસ્વવર્ણગુણુકર્માત્મકારે વતનિ ધર્મની આરાધનામાં તત્પર થબું જેઠાં. પોતપોતાના ગુણુકર્માત્મકારે સારે વત્ત્યો વિના લૈકિકધર્મની નાશ થવાથી લોકોત્તરધર્મની ગુહસ્થાવાસમાં આરાધના બની શકતી નથી. ગુહસ્થાવાસમાં રહેનારા સર્વમતુજોએ યોગ્યતા વિના લ્યાગી અની શકતા નથી. માટે ગુહસ્થાવાસમાં રહેલા અરે વર્ણના લોકોએ સ્વસ્વગુણુકર્માત્મકારે બ્યવહારધર્મપ્રવિત્તોને નિયમસર સેવવી જેઠાં. ચારે વર્ણના જૈનોએ પૂર્વો જ્યાં સુધી ગુણુકર્માત્મકારે લૈકિક આલાણુ, ક્ષત્રિયાદિ કર્મોના લ્યાગ નહેલો કર્યો લાં સુધી તેઓ ચારે વર્ણના બળથી જૈનધર્મને રાજકીયધર્મ તરીકે સંરક્ષી શકતા હતા. પરંતુ જ્યોરથી ક્ષત્રિયના ગુણુકર્મ પ્રમાણે વર્તવામાં પાપ છે, રાજનાં કર્મ કરવામાં પાપ છે, સેનાધિપતિનાં કર્મ કરવામાં પાપ છે છલ્યાદિ વિચારેને ધારણું કરી આલાણુદિ વર્ણના ગુણુકર્મોથી બ્રહ્મ થયા, ત્યારથી લોકોત્તર જૈનધર્મની આરાધનાથી વિભુષ થયા અને જેના પરિણામ તરીકે વૈશ્વેમાં ફૂત વણિકું ડેં તરીકે જૈનો કાયમ રહ્યા અને જૈનોની કરોડોની વસતિ ઘર્ટી ગઈ અને લગભગ ફૂત બારલાખ જેટલી વસતિ રહી માટે જૈનોએ હવે પૂર્ણી ગેડે ચતુર્વર્ણગુણુકર્માત્મકારે બ્યવહારથી વતનિ લોકોત્તર જૈનધર્મની સ્વાધિકાર પ્રમાણે આરાધના કરવામાં તત્પર થબું જેઠાં. ગુહસ્થાવાસમાં ચારે વર્ણના ગુણુકર્મ પ્રમાણે વતનિ જેઓ ધર્મારાધનમાં તત્પર થાય છે તે ખરા જૈનો છે.

સાધુવૈયાદૃત્યકારકાઃ

સાધુધર્મ પાલનાની જેઓમાં યોગ્યતા આવી છે તેઓ સાધુઓ લ્યાગીઓ બની શકે છે. સાધુઓએ જૈનધર્મનું મૂર્તિમાન સ્વરૂપ ચિરાણ્ય રહે છે. ચોકનાં સુખો અનુભાવ કરનારા સાધુઓ છે. સાધુવર્ગની આવસ્યકતા સંબંધી જેઠલું લખીએ તેઠલું ન્યૂન છે. જૈનધર્મના પ્રવર્તક સાધુઓ છે માટે જેમે તેવા સથોગોમાં સાધુવર્ગ તરફ અર્વિ ન કરવી જેઠાં. સાધુઓની આશીર્વાદી મતુષોનું કલ્યાણ થાય છે, સાધુઓ અવતારે સમાન છે માટે તેઓની

વૈયાવર્ત્ત્ય સેવાચાકરી કરવામાં ડોઢુપણું વખતે જરા ભાત્ર આમી ન રાખ્યી જોઈએ. ઉત્તમસાધુઓની ભક્તિ કરવામાં આત્માર્પણું કરવું જોઈએ. ઉત્તમ સાધુઓની ભક્તિ કરવામાં દરોજ અભિનવ ઉત્સાહ ધારણું કરવો જોઈએ. પરતુ ઐદ, ક્લેશ, ઉદ્ગ આહિ દોષેને ન સેવવા જોઈએ. સાધુઓનો દોષ દેખવાથી વા તેમની નિંદા કરવાથી સાધુઓની વૈયાવર્ત્ત્ય કરતાં યથાર્થ કળ પ્રાપ્ત થઈ શકતું નથી. સાધુઓની વૈયાવર્ત્ત્ય કરતારાઓ આ ભવમાં સુખી થયા વિના રહેતા નથી. અદ્ધ-ગ્રેમથી કરેલ વૈયાવર્ત્ત્ય કરી નિષ્ઠળ જતું નથી માટે સાધુઓની જે વૈયાવર્ત્ત્ય કરે છે તેજ ખરા જૈનો જાણુવા સાધુવર્ગની હ્યાતીમાં જૈનધર્મની હ્યાતી છે એ મંત્ર કહિ ન ભૂલવો જોઈએ.

ધર્મચાર્યજ્ઞાનુસારપ્રવર્ત્તકા:

જૈનધર્મચાર્યોની આજાનુસારે પ્રવત્તિ કરતાર જૈનો છે. શ્રીતીર્થુંકર પ્રભુની પાટે આવેલા જૈનધર્મચાર્યોને જે ધર્મ પ્રગત્યથ્ર આજાઓ કરે તે શ્રીતીર્થલુની આજાઓ છે, એમ દફ નિશ્ચય કરીને તેમાની આજાઓ પાળની જોઈએ. તીર્થુંકરની આજામાં અને જૈનધર્મચાર્યાંની આજામાં લેદ ન ભાનવો જોઈએ. વર્તમાન કાલમાં ધર્મની ચદ્દિતાના ઉપાયોને આચાર્યો જાણી શકે છે અને તેથી વર્તમાનકાલીન આચાર્યોની આજા પ્રમાણે વતીનિ ધર્મની વૃદ્ધિ કરવી તથા આત્મકલ્યાણું કરવું તે તીર્થુંકર પરત્તમાની આજારૂપજ છે. માટે ખરા જૈનો એ પ્રમાણે સમજુને જૈન ધર્મચાર્યોની આજા પ્રમાણે વતીનિ જૈનશાસનની ઝાણકલાલી પ્રવતિવિ છે. જૈનધર્મચાર્યોની ધર્મની વૃદ્ધિ વિના અન્ય કોઈ સ્વાર્થ નથી. પોતાના ધર્મચાર્યાંની આજા પ્રમાણે વર્તવાથી જૈનોના સર્વ પ્રકારના બણમાં વૃદ્ધિ થાય છે. ધર્મચળની વૃદ્ધિથી અન્ય સર્વશુભ બળોમાં અણુધારી સાહાય મળે છે, માટે જૈનોએ જૈનાચાર્યાંની આજા પ્રમાણે ધર્મકર્મમાં જૈનશાસનોનની માર્ગમાં પ્રવત્તિ કરવી જોઈએ. એઓ આચાર્યોની આજા પ્રમાણે વર્તતા નથી તેઓ જૈનધર્મનો નાશ કરવામાં ભાગીદાર બને છે. દેશોનની સંઘોનની વર્ગે દિનનિયોગની વૃદ્ધિ થાય એવી રીતે જૈનધર્મચાર્યોએ ધર્મકર્મની આજાઓ કર્યાવે છે. વિદ્યા, સત્તા, ધન, આહિયા જૈન કોમની સહા ચહેરી થયા કરે અને અન્યધર્મચાર્યોની હરીદાઢમાં જૈનો પાછળ ન પડે એવી અતરમાં લાગણી ધારણું કરીને દેશકાલરાજૈનોને ધર્મ-કર્મી કરવાની જે એ આજાઓ કરે તે શિરસાવધ માનીને સર્વ સ્વાર્પણું કરીને પાળવી જોઈએ,

“ तथाविद्वद्व्यक्षेत्रकालभावेन धर्मरक्षकाः ”

जैनो तथाविद्वद्व्यक्षेत्रकालभावथी धर्मतुं रक्षणु करनारा छे ते जैनो जाणुवा. जे जे कणे जे जे उपायोवडे जैनधर्मतुं रक्षणु थाय ते ते उपायोने सेववा ज्ञेधअ. जे जे हेशामा जे जे खण, कण, युक्ति, प्रयुक्ति, उपदेश वगेरेथी जैनधर्मतुं रक्षणु थाय ते ते क्षेत्रे ते ते करवुं ज्ञेधअ. जे जे भाववडे अने जे जे भतुयोवडे जैनधर्मतुं रक्षणु थाय तेम करवामां जैन अच्याए कहि पाणा न पडवुं ज्ञेधअ. भराजैनोना रक्षणुमां अने तेनी धृष्टिमां जैनधर्मनी रक्षानो अंतर्भाव थाय छे. धर्मतुं रक्षणु करवाथी ते सर्वं विश्व ग्रवेतुं रक्षणु करे छे भाटे जैनधर्मतुं अवश्य रक्षणु करवुं ज्ञेधअ. जैनधर्मतुं रक्षणु थाय अव्यां सर्वं प्रकारनां औत्सर्जिक तथा आपवाहिक खण संप्राप्त करवां ज्ञेधअ. जैनधर्मनो सर्वत्र प्रयार करवामां आत्मबोग आपतां जे पाछो पडे छे अवा जैनने नामोशी लागे छे. तेना पूर्वज्ञेनो तेनापर शाप पडे छे. पूर्वे आद्वैती साये जैनधर्मनी रक्षा करवामां श्रीमद्भवाही वगेरे आचार्योंने आत्मबोग आप्यो होता तेनुं स्मरणु करीने वर्तमान कालमां वर्तता जैनोअ जैनधर्मनी रक्षामां आपता उपायो लेवा ज्ञेधअ. जैनामां जैनधर्माभिमान नथी ते जैन थवाने लायक नथी. जैनधर्म जे हुनियामां श्रवतो रहेशो तो जैनोनी चहती कायम रहेवानी. पूर्वकालना जैनोनां संतानोमां जे जैनधर्मना अभिमाननो बुरुसो नरभ पटी ज्ञेश, तो तेम्हा हुनियामां धूणयकी पणु हलका गण्यावाना. जैनो नास्तिक अनीने जैनधर्मनो त्याग करे छे तेम्हा हेश, डाम, शाति वगेरेतुं पणु कल्याणु करवा समर्थ थवाना नथी. धर्मनी अद्धा विनाना भतुयोमां आत्मण-प्रगटी शक्तुं नथी. धर्मविनानी बालोन्नति करवाथी अते विश्व भतुष्योने भरी शान्ति भणती नथी. भाटे धर्म, अद्धा, धर्माभिमान धारणु करनारा जैनोअ धर्मनी रक्षा थाय अव्यां हाल तो आपहृधर्मने अनुसरी कर्मी करवां ज्ञेधअ.

सर्वदेशीयसर्ववर्णेषु जैनधर्मप्रचारकाः

भारत, अश्विया, युरोप, आस्ट्रिका, अमेरिका, आस्ट्रेलिया वगेरे सर्व देशामां उत्पन्न थयेका सर्वज्ञतीयभनुष्योमां सर्वज्ञ तीर्थं करो प्रतिपादित. जैन धर्मनो इक्कावे करनार भरा जैनो होय छे. सर्वहेशाना सर्वज्ञतीयभनु-

ઘોને છથરપદ પ્રાપ્ત કરવાનો એક સરખે હક્ક છે. તીર્થંકરપરમાત્માઓને સર્વદેશીયસર્વવિરુદ્ધિ મનુષ્યો માટે જૈનધર્મનો ઉપહેશ આપ્યો છે એટલું તો નહિ પરંતુ પણશ્યો અને પંખીઓના આત્માઓની ઉન્નતિ માટે, સુખ માટે જૈનધર્મનો ઉપહેશ આપ્યો છે. તીર્થંકરોનાં સર્વ વચ્ચોમાં અધ્યાત્માસાન ભરેલું છે. અધ્યાત્મરાનથી ભરપૂર એવાં આગમેતું મનન કરવાથી જૈનધર્મ આરાધવાની ઉપયોગિતાનો અલ્યત ઘ્યાલ આવે છે અને તેથી સર્વદેશીય મનુષ્યોના કલ્યાણ માટે જૈનધર્મનો, જૈનશાસ્ત્રોનો પ્રચાર કરવાની લાગણી ગુણાતુરાળીઓને તુર્ત થાય છે. મનુષ્યોના સર્વ પ્રકારના દોષોને હરી આત્માની પરમશુક્તા કરનાર જૈનધર્મ છે. સાયન્સ વિદ્યાહિનાં તત્ત્વોત્તું અધ્યાત્મદાયિઓ જૈનધર્મમાં વ્યાખ્યાન કરવામાં આવ્યું છે. વેદોનો, ઉપનિષદોના સારનો જૈનાગમોમાં અન્તર્બીવ થાય છે. જૈનધર્મના પ્રચારથી દુનિયાના સર્વ મનુષ્યોમાં પૂર્ણ શાન્તિ પ્રસરી શકે છે. આત્માની, અળની ગુપ્ત વિદ્યાઓને જૈનધર્મ શિખવે છે અને સહાયારોથી મનુષ્યોને પવિત્ર કરે છે માટે જૈનધર્મનો નિષ્ક્રિપત દાયિઓ પ્રચાર કરવાની જરૂર છે. અમૃકુવર્ણને જૈનધર્મ રળજર કરી આપવામાં આવેલ નથી. જૈનધર્મને સ્વાધિકારે પાળવામાં વિશ્વમહુષ્યોનો એક સરખે હક્ક છે. તેમાં નાત જાતનો બેદ આડો આવતો નથી. શુરૂની દૂપાથી જૈનધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે. સંપ્રતિ રાજયો એસિયાબંડામાં જૈનધર્મનો સારો રીતે પ્રચાર કર્યો હતો. દુનિયાના રાજ્યો અને મનુષ્યો સુધરી સુધરીને જે સારા વિચારો અને સારા આચારોની ડેટિ પર આવે તે સારા વિચારો અને શુભાચારોને તીર્થંકરોને લાલોવર્ષથી અસર્ઘવર્ષથી પ્રતિપાદન કર્યો છે. માટે જૈનધર્મના સર્વ દેશમાં પ્રચાર કરતાં સર્વદેશીય સભ્યોનો સુધારો થવાનો. પદ્ધતિમાં, વનસ્પતિમાં દાકતાર બોલે જીવ છે એમ ને શાધ કરેલી છે તેની તો કેવળસાનવહે તીર્થંકરોને પૂર્વથી શાધ કરી છે. માટે જૈનશાસ્ત્રોનો સર્વદેશની સર્વ લાલાંઝામાં ઉત્તારો કરાવવો અને પરહેરામાં જૈનધર્મનાં તત્ત્વો સમન્ય એવા ઉપહેશ આપવા. વિવેકાનંદ અને વીરયંદગાંધીની પેડે અન્યદેશીય મનુષ્યોને ઉપહેશ આપવા મહારાનીઓ પ્રગટાવવા. જૈનધર્મના મહારાતાઓ પ્રગટે એવાં જૈનધર્મ રૂનપ્રેરણ ગુરુકુળો સ્થાપવાં. જૈનધર્માચારોની આત્માતુસારે જૈનધર્મના પ્રચારની સર્વ વ્યવસ્થા કરવી. જૈનધર્મપ્રવારકાઃ એ સૂત્ર કરતાં આ સત્ત્વ વિશેષ છે, કારણું કે આ સૂત્રમાં સર્વ દેશમાં અને સર્વ જાતિ-ચેમાં જૈનધર્મ પ્રચારવાની સૂચના છે. સત્ય એવા જૈનધર્મનો પ્રચાર કરવામાં ડોધ જાતની સંકુચિત દાયિ રાખવાની જરૂર નથી. જૈનધર્મ શાસ્ત્રોમાં

ઉદાર વિચારો અને ઉદાર પવિત્ર આચારો છે, તેથી વિશ્વજ્ઞનોતું હ્યાદિ સિદ્ધાંતોવડે તે વિશેષ કલ્યાણ કરી શકે છે. માટે જૈનધર્મનો સર્વદીશીય, સર્વાજીતીય ભતુષ્યોમાં સર્વ ભતુષ્યોમાં સર્વસ્વાર્પણું કરીને પ્રચાર કરવો.

આપત્કાલેત્વાપદ્બર્હર્મકર્મભિજેનોન્નતિસાધકા:

આપત્કાલમાં આપહધર્મકર્મોવડે જૈનોન્નતિ સાધક ખરા જૈનો અને છે. જ્યારે જૈનધર્મનો નાશ થવાનો પ્રસંગ આવે છે અને જૈનોની સંઘ્યાધીને બિલકુલ ક્રમ થાય છે તારે જૈનધર્મનો આપત્કાલ અને જૈનોને આપત્કાલ સમજન્ય છે. ઉસર્ગની પેડે આપત્કાલમાં જૈનધર્મ પ્રવર્તીવિવાના ઉપાયોને લેછ રાકાતા નથી, પરંતુ હાલ જેમ યુરોપીય મહાયુદ્ધમાં આપત્કાલના ધર્મોનો સ્વીકાર કરીને બિનીશ સરકાર સ્વાતંત્ર્ય રક્ષણ માટે આપત્કાલ યુદ્ધકર્મોનો સ્વીકાર કરે છે તે પ્રમાણે જૈનોએ હાલ આપહ ધર્મકર્મોનો સ્વીકાર કરીને જૈનોન્નતિ સાધક બનવું જોઈએ. મેવાળા પ્રતાપરાણા પર આપત્તિ આવતાં તેણે આપહ ધર્મોનો સ્વીકાર કર્યો હતો. અને હુંગરાઓમાં ભર્યકી ભરાઈને યુદ્ધો કર્યાં હતાં. આપત્કાલમાં આબણોને શદ્રોનાં કર્મો કરીને ગ્રવાતું ભતુસ્મૃતિમાં કર્યું છે. આપત્કાલમાં પૂર્વના ધર્મના વિચારોમાં અને આચારોમાં પરિવર્તન અવશ્ય કરવું પડે છે અને જે એ આપત્કાલમાં આચારોતું, કર્મોનું પરિવર્તન કરે છે તે પુનઃ અસલની સ્થિતિ પ્રાપ્ત કરી શકે છે અન્યથા તેઓ સ્વાસ્તિત્વનો નાશ કરે છે. શિવાળ મહારાજાને હિંદુઓ પર આપત્કાલ આવેલો જાણુને તથા હિંદુધર્મ પર આપત્કાલ આવેલો જાણુને તેણે મહાન સુગલરાજ્યતી સાથે અપવાદકાલીન યુદ્ધો કર્યાં અને તેણે અપવાદ રાજ્ય યુદ્ધ ધર્મકર્મોને અતુસરી લડી પુનઃ હિંદુઓની યદ્વારી કરી. જ્યારે બૌધ્ધોનું અને જૈનોતું અત્યંત જેર વધ્યું, અને વેદપરથી ભારતવાસીઓની આસ્થા ઉડી ગઈ ત્યારે કુમારિલ ભટે, યાદરાયણ વેડબ્યાસે અને શંકરાચાર્યે સ્વધર્મ પર આપત્તિ આવેલી દેખાને આપત્કાલ ધર્મોનો સ્વીકાર કરી વેદસ્તોને ઉપ્લસ્થિત કર્યાં. તથા અત્યવિચારોને અને અત્યાચારોને યથાદું કરીને તથા અસલની યથાદિક કિયાઓની અંદરા કરીને વેદધર્મના નામે ધર્મ પ્રચારણા કરી. મહામદ પયગાથરે આપહ ધર્મના નિયમોને અતુસરી છેવટે અરથસ્તાનમાં મોહેમહેન ધર્મ પ્રચાર્યો અને પ્રતિપક્ષીઓનું જેર હુંગર્યું. આપત્કાલમાં અપવાદ ધર્મોને અતુસરીને ગૃહસ્થોના અને ત્યાગીઓના ધર્મકર્મોમાં દેશકાલોનુસાર

પરિવર્તનો-ક્રાંકારો કરવા પડે છે. જે ધર્મના લોકો દેશકાલાતુસારે ધર્મકર્મભાં પરિવર્તનો કરતા નથી અને વહોરાના નાડાની પેઠે પકડયું તે પકડયું એમ કદાચણ કરે છે તે ધર્મના લોકો આપત્તિકાલમાં જીવવાને, ઉનાતિ કરવાને અને સ્વધર્મ રક્ષણું કરવાને શક્તિમાન થતા નથી. પૂર્ણાની જૈનોની ઝાંખાં-લાલીનો વિચાર કરીએ તો હાલ જૈનો પર અને જૈનધર્મ પર આપત્તિકાલનાં આપહધર્મનાં કર્મો કરવાનો પ્રસંગ આવ્યો છે મારે તેતું યુર્ગમ ગાન કરીને ધર્મબુસ્ત જૈનો આપહધર્મ કર્મો કરીને જૈનોની ઉનાતિને સાથે છે. ક્ષેત્રકા-લાતુસારે શુદ્ધકર્માતુસારે આલાણુંનો, ક્ષત્રિયનો, વૈશ્યનો અને શ્રદ્ધનોને ધર્મકર્મભાં જોડવા અને જૈનોની સાંઘા વધે તથા જૈનધર્મથી સર્વ લોકોનું કલ્યાણ વર્તમાનમાં તથા ભવિષ્યમાં થાય એવી પ્રવૃત્તિ કરવી.

જિનગુણવિશિષ્ટસર્વદેવનામમંત્રોપાસકા:

રાગદ્વિષ્ટ રહિત જિન કહેવાય છે. અનંત શુન દર્શન ચારિત્ર ધારકને જિન કથવામાં આવે છે. જિનશુણ વિશિષ્ટ જે જે દેવોનાં નામો હોય તે નામ મંત્રાનો જાપ કરનાર જૈનો કહેવાય છે: નમસ્કાર મંત્ર, ચોનીશ તીર્થ-કરોનાં નામો વિગેરોનો જાપ કરવાથી દેવશુણોની પ્રાપ્તિ થાય છે. જિનદેવોનાં નામ મંત્રની ઉપાસનાથી પુણ્ય સંપર અને નિર્જરા થાય છે. અલ્લા, વિષ્ણુ, પ્રભુ, દેવ, શિવ, પરમાયા, પરમાત્મા હર, હરિ, જગન્નાથ, શાકર, શાલુ, મહાદેવ વિગેરે જિનદેવોનાં શુણ વિશિષ્ટ નામો સમજુને તે દ્વારા આત્માની શુદ્ધતા કરીની, રાગદ્વિષ્ટ રહિત શાનાપરણીયાદ્વાતિકારિહિત જિનદેવોનાં અસંખ્ય નામો છે. ગમે તે નામ દ્વારા જિન શુણેતું સ્મરણું કરવું. જિન શુણું ગાવા, જિન પરમાત્માનાં વ્યુત્પત્તિકારા લાઘ્યો નામો શુણ વિશિષ્ટ થાય અને તેનાથી જિનદેવોનો સાક્ષાત્કાર થતો હોય તો જિનદેવોનાં નામોમાં પક્ષપાત કરેલો ન જોઈએ. પોતાને હૃદ્યે તે નામથી જિનદેવતું સ્મરણું ધ્યાન ધરવું. અરિહંત મંત્રનો જાપ કરવાથી અનંતભવનાં અનંત કર્મોનો ક્ષય થાય છે. નમસ્કાર મંત્ર કલ્યાણ અરિહંત મંત્ર જાપની વિધિ અતાવામાં આવી છે. અં અહીં મંત્રનો એક લાખવાર જાપ કરવાથી ચિત્ત શુદ્ધ થાય છે અને જિનદેવોનાં દર્શન થાય છે. ચિત્તની શુદ્ધ થાય છે. જે અહીં મંત્રનો જાપ કરે છે તેને યમ્નો ભય થતો નથી અને ચાર હત્યાનાં પાપો કરેલાં હોય છે તેનો પણ નાશ થાય છે. થોગ ગાનની પ્રાપ્તિ થાય છે અહીં અહીં મંત્રનો જાપ દરેક જૈનોએ કરવો જોઈએ. સુરિએ સુરિ મંત્રનો

दररोज जप करते नेहंचे. उपाध्यायाद्वये वर्धमान विद्याना जप करते नेहंचे. आवकोचे अषिभंडल मन्त्रो जप करते नेहंचे. गुरुगम विधि पूर्वक मन्त्रोनी ज्ञापादि द्वारा उपासना करवाथी शांति तुष्टि पुष्टि परमात्म पद प्राप्ति थाय छे.

व्यावहारिकधार्मिकसर्वशुभशक्तिग्राहकाः

व्यावहारिक अने धार्मिक सर्व शुभ शक्तिना आहेक जैनो प्रगतिमान् अनी शंके छे. अन, वाष्णी, काया अने आलुविकानी धन विजेरे शक्तियें भीलवटी अने तेने व्यावहारिक कार्योमां तथा धार्मिक कार्योमां चौजवी. सञ्ज्यसत्तामां अथर्व भेणवतु; प्रधानादि पदवीयोने प्राप्त करवी, अनेना रक्षकाहिनी पदवीयोने प्राप्त करवी, अभेरिका अने ठळांडना भोटा व्यापारीयोनी हरिक्षादि करवी. सर्व प्रकारनी भाषायोना ग्रेहेसर अनवतु. सर्व-प्रकारनी झुन्नरक्षणातु शिक्षण वेध तेनां कर्मी करवां धर्त्यादि व्यावहारिक शुभ शक्तियें कडेवाय छे. गुहस्थ जैनो व्यावहारिक शुभ शक्तियोने अहे छे. व्यावहारिक शुभ शक्तियोनी प्राप्तितथी स्वातंत्र्य अवन अने देशनी, धर्मनी उन्नति कर्ती शक्ताय छे. शक्ति विनानो भनुष्य हुनियामां अववाने लायक नथी. अभेरिकाना जंगली लेडी शुभ व्यावहारिक शक्तियोनी प्राप्ति विना नष्ट प्राप्त थर्दि गया. सर्व व्यावहारिक शुभ शक्तियोनी क्षीणताथी जैनो चालीस कर्ण भरीने तेर लाख थया. भोटा भोटा रानयो, प्रधानो, सेनापतियो, जगत् शेठा, भोटा व्यापारीयो. भरीने सामान्य पक्षितमां आवी गया. तेथी धर्मनी शुभ शक्तियोना प्रयार करवामां मन्द शक्तिवाणा अनी गया. लक्ष्मी, सत्ता, विद्या अने शारीरिक शक्तियोनी प्राप्ति विना जैनो हुनियामां अन्य लेडीनी पाणी पडी क्ष्यरादि जवाना अने तेथी नाम शेष धर्म थर्द जवाने. भय-रहे छे. आत्मानी रानाढिक शक्तियो भीलवटी नेहंचे. जैन धर्मनी अक्षा विना आत्मण भीलतु नथी भाटे धार्मिक शक्तियोने सेवा, दान, धर्मकायासंथी भीलवटी नेहंचे.

सर्वशक्तिविद्यातकाऽशुभविचाराचारनिवारकाः

सर्वशुभ शक्तियोना विद्यातक ने ने अशुभ विचारो होय छे तेओतुं निवारण्य करनार जैनो होय छे. आललमधी कायिक्यलनो नाश थाय छे. सृष्टिविद्यकर्मी करवाथी शरीरनी पायमाली थाय छे तेथी तेवा अर्थात्

હાનિકારક રિવાજેનો નાથ કરનાર ખરા જૈતો અને છે. માંસભક્ષણું, દારૂપાન, ગુગડું, ગાંને, અશીખું વિગેરનાં બ્યસનો તાગ કરનાર તથા વૈસ્યા પરલોનો તાગ કરનાર ખરા જૈતો અને છે. કારણું કે માંસભક્ષણું, દારૂપાન વિગેર બ્યસનોથી શરીરની, લક્ષમીની, યુદ્ધની અને આત્માની પાયમાલી થાય છે. ગૃહસ્થજૈતો પરહેશગમન કરીને વિદ્યાલક્ષ્મી મેળવતા હોય અને ધર્મની અદ્વાદી બ્રષ્ટ થતા હોય તેઓના સામું ન પડતું જોઈએ, કારણું કે બ્યસ હારિકશુભશક્તિઓ મેળવ્યા વિના જૈતો અન્ય કોમોથી પાછળ પડી જાય તો ધર્મનું બળ વધી શકે નહિ વિદ્યાલક્ષ્મનો તાગ થવો જોઈએ. વિદ્યાશક્તિ, સત્તાખિદ્ગરીશક્તિ અને ધનશક્તિ તથા કાયશક્તિથી જૈતો ધર્મમાં પણ આગેવાની ભર્યો ભાગ લેઈ શકે છે. જૈન તાગી સાધુઓની પેઠે ગૃહસ્થ-દશામાં ગૃહસ્થજૈતો જો નિર્ણયિતાનાજ ઉપાસકો અને તો તેઓ બ્યવહારમાં દીન બની જાય અને તેથી અશક્ત મનુષ્યોથી કંધપણું કર્યા કરી શકાય નહિ. મહાત્મા મોહન કરમચંદ ગાંધી જો બારીસ્ટર ન બન્યા હોત તો તેમનાથી દેશસેવાનું કાર્ય બની શકત નહિ. ધન, સત્તા, વિદ્યા અને રાજ્યશક્તિયોથી એકવાર મનુષ્ય મહાન બન્યા પણી તે તે શક્તિયોનો જોગ આપે છે તારે તેના તરફ હુનિયાના મનુષ્યોનું આકર્ષણું થાય છે. બ્યવહારમાગમાં અને ધર્મમાર્ગમાં સાંકડા વિચારોમાં અને સાંકડા આચારોમાં ગુંધાઈ રહીને ઉદાસવિચારોનો અને આચારોનો નાથ કરવાથી જૈન ડેમની પહીનું પાપ હોય કેનારાઓએ હવે ચેતોને બાલવું જોઈએ. જમાનાના કરવાની સોયે મનુષ્યે પણ કરવું જોઈએ. હુનિયાં લેડા જે જે શુભશક્તિયોને બ્રહ્મણ કરીને ઉત્ત્ય બનતા હોય તેને શુભશક્તિયોને પ્રાપ્ત કરવી જોઈએ. ચાર ખાડાના મનુષ્યોની સોયે હવે જૈતોનો સંખ્યા થયો છે. જૈતોએ બ્યાપારનો કદમ્બિ લાગ ન કરવો જોઈએ. સર્વ પ્રકારની વિદ્યાઓને પ્રાપ્ત કરવી જોઈએ અને જૈનધર્મની પૂર્ણાંકાથી આરાધના કરવી જોઈએ. આપત્તિકાલના ધર્મને અતુસરીને સાધુઓએ અને ગૃહસ્થોએ વર્ત્તમાનમાં આલશુભશક્તિયો જે જે હોય તેના અનુકૂલ વિચારોથી અને આચારોથી પ્રવર્ત્તિ જોઈએ. ચોથા આરાધનાની પેઢ ધર્માચારો પાળવા જાય તો આ કાલમાં જૈનસાધુઓનું અરસ્તલ ન રહે. હાલ તો મૂલપત્રોપર લક્ષ રાખીને તેને પાળવાં જોઈએ. આચારો કરતો હ્યા, સત્ય, નીતિના શુણો. તરફ વિશેષ લક્ષ રાખીને સત્તાશુભ-વિદ્યાતકચિચારોનો અને આચારોનો તાગ કરવો જોઈએ. મહાસંધની પ્રગતિમાં પ્રતિકૂલ વિચારો અને પ્રતિકૂલ જે જે પ્રફૂતિથી હોય તેનો તાગ

जैनोपनिषद्.

११

करवे। ज्ञेधज्ञे सर्वशुभशक्तियो प्राप्त करवाना लियारो अने कमेने सर्वजैनों आप्त श्राप्त करवां ज्ञेधज्ञे अप्त करवामां के भृत्य अने छे ते प्रेतानी भाताने क्षम्ये छे अप्त धनधर्मना डुरीवालों त्याग करवे। ज्ञेधज्ञे।

धनसत्ताविद्याबलवीर्यवन्तः

गृहस्थ जैनो सर्व प्रकारनां धन, सर्व प्रकारनी प्राप्तव्य सत्ता, आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक सर्व प्रकारनी विद्या, खडोतेरकलानी विद्या, शारीरिक धन अने आनंदिक आत्मकवीर्यवत्तजैनो होय छे। गृहस्थवासमां धननी जडर पडे छे। धन अने सत्ता करतां विद्यानी विशेष जडर पडे छे। विद्यानी घेठ शारीरिक, वाचिक धननी जडर पडे छे अने तेना करतां आलाना अनंत शान दर्शन आरितनी विशेष जडर छे। गृहस्थवासमां केडी विनानो भनुष्य केडी समान छे। गृहस्थजैनो धन, सत्ता, विद्या, धननी साथे आध्यात्मिक वीर्यने संपादन करी शके छे। गृहस्थजैनो नेटका विश्वमां धन, सत्ता, विद्याद्विठे आगेवानो अने छे, तेट्ला तेओ धर्मने सर्वत्र प्रयार करीने व्यापक अनावना शक्तिमान थाय छे। धन, सत्ता, विद्या, धन विना संसारमां अन्य धनवान भनुष्योना हाथे क्षयराह जवानो प्रसंग प्राप्त थाय छे, भाटे अन्तरूढी निर्वेष रहीने भगवद्गीताना अर्जुननी घेठ धन, सत्ता, विद्याहि आवश्यकदौकिक कर्तव्योने कुरवां ज्ञेधज्ञे अने अन्तरूमां आध्यात्मिकवीर्य प्रगटावतुं ज्ञेधज्ञे।

राज्यसमाजकुदम्बव्याप्तिसंघव्यवस्थाप्रवृत्तिमन्तः

जैनो धन, सत्ता, विद्या, धन, वीर्यनी प्राप्ति करीने राज्यनी सेवामां तथा समाज सेवामां तथा कुदम्ब सेवामां, शाति सेवामां तथा अतुर्ध्रिध संधनी सेवामां प्रवृत्तिवाला थाय छे। जैनो पूर्वे राज्यज्ञे हता, प्रधानो हता, सेनापतियो हता। अब तेओ राज्य विषयथी उहास्तीन जेवा थाइ अमा छे। परंतु राज्यव्यवस्थानी प्रवृत्तिमां भाग देवाथी भनुष्योनी शांति सुखमां वृष्टि करी थकाय छे तथा देशनी उन्नति करी थकाय छे। भाटे जैनों राज्यव्यवस्थामां भोटी भोटी पहरीज्ञे प्राप्त करीने भाग देवो ज्ञेधज्ञे। व्यापारनी व्यवस्थामां, क्षात्रधर्मकर्म व्यवस्थामां, सामाजिक व्यवस्थामां, कार्बनिक शुभ व्यवस्थामां भाग देवाथी जैनधर्मना विचारानुं अने आओ-

रेतुं भक्त्व साधी शकाय छे. अन्योना भक्तामां निष्कामदृष्टिथी लाग देवाथी धर्मनी वृद्धि थाय छे, कुटुंब सेवा अवस्थ करवी जेधेहे. याति-योनी सेवा करवा इप व्यवस्था अवस्थ करवी जेधेहे. संधनी प्रगति व्यवस्था अवस्थ आत्मलोग आपीने करवी जेधेहे.

जैनेषु जिनवत्पूज्यमावधारकाः

जैनोपर निनप्रखुनी ऐठ पूज्यभाव धारणु करनारा जैनो होय छे. जैनोमां निनपत्तुं देव्याथी जैनधर्म छवते रही शके छे. भक्तामां अवस्थ भगवाननो वास होय छे. जैनोमां निनभगवाननो वास छे. जैनोनी अस्ति-पर निनहेवना धर्मनी अस्तिता छे. ने जैनोनो तिरस्कार करे छे ते निननो तिरस्कार करे छे. जैनोनी संघामां वृद्धि थाय एवा वियारो अने प्रवृत्तियोमां निनहेवनी आस आराधना रहेली छे. जैनोनी सेवा करवाथी निनहेवनी सेवा करी शकाय छे. जैनोने हेहीने ने वैर-अर भूली जध फवित थतो. नथी ते जैन नथी. एक पलु गमे ते भतनो जैन कांथी? जैनोपर जैनहेवासरो वगेरेनी सुरक्षितानो आधार छे, भाटे जैनोहे परस्पर जैनोने पूर्ण साहाय आपी. ‘साहभीना सगपणु समो, अवर न सग-पलु होय; भक्ति करो साहभीतणी, समक्षित निर्भाल होय.’ जैनोनी उन्नति करवाथी पुण्य संवर निर्झरने मोक्षनी प्राप्ति थाय छे.

सर्वसापेक्षनयदृष्टिभिः सर्वतत्त्वविचारकाः

जैनो सापेक्षनयदृष्टिहे सर्व धर्मोना सत्यो स्वीकार करे छे. साग-रेखी ऐठ तेगोनां हृदय उदार होय छे. अन्यधर्मीं पर तेगो तिरस्कार भतावता नथी, परतु तेगोने सापेक्षनयदृष्टियोवडे धर्मनी घूण्यीं सम-जनो छे. अन्य धर्मीं योअ्य सिद्धांतोने सापेक्ष दृष्टिहे अहेणु करे छे अने ते सिद्धांतोनो जैन धर्मोनां अन्तर्ब्रह्म डेवी रोते थाय छे ते अन्य भनुओने प्रेमभावथी समझले छे. प्रेमथी धर्मनी वृद्धि थाय छे. प्रेम विना पोतानो अने अन्यने धर्मनी प्राप्ति थती नथी. प्रेम विना सत्त्वा दृष्टि थती नथी, भाटे अन्य धर्मी भनुओने प्रथम प्रेमथी चहावा. तेभना आदगानी साये पोतानो भेज करवो अने पक्षात् तेभनी योज्यता मुजुः सहविचारो अने सदाचारोवडे तेगोने जैनधर्मी अनावता. हिंदु, मुसलमान, पारसी, यैषां,

जैनोपनिषद्.

१५

भ्रूस्ति वगेरे गण्याता भनुष्योना आत्मासेमां अनंतरोन छे, अनंत दर्शन छे, अनंत मारिन छे, अनंत सुख छे ऐज जैन धर्म छे. भाटे जैवी जैनधर्मनी दृष्टियोवडे सर्वतत्त्वना विचारके लेग्या छे ते जैनो छे. शुव, अशुव, पुण्य, पाप, आस्व, संवर, निर्जर, ब'ध अने गोक्ष ये नवतत्त्वोंतु सातनयोवडे ने गान करे छे ते जैनो गण्याय छे. पद द्रव्यना शुणु पर्यायोना ने बोध करे छे ते जैनो छे. आत्मानी साथे गानावरण्याहि अष्टकर्मनो संबंध डेवी रीते थये छे तेतु ने गान करे छे ते जैनो छे. जैनशास्त्रोमां सर्वतत्त्वो संबंधी सारी रीते विवेचन करवामां आवश्यु छे. भाटे जैनशास्त्रोमां प्रतिपादित द्रव्यानुयोगानु अने अध्यात्मशास्त्रोतु लेग्या भनन करे छे तेग्या सर्व सापेक्षनयदृष्टियोना गानने प्राप्त करी शके छे, अने तेथी अन्यदर्शनीयशास्त्रोने पणु सम्यक्षुत्तरपे परिणुभावी शके छे. लेग्या सर्वसापेक्षदृष्टिथी सर्व तत्त्वोना विचार करे छे तेग्या आ विश्वमां सर्व भनुष्योमां जैनत्व प्रकट करवा समर्थ थाय छे. ने जैन योते जैन धर्मनी सापेक्षदृष्टियो अने तत्त्वो संबंधी कंध जाखुतो नथी ते जैन धर्मनो प्रचार करवामां परिपूर्णु आत्मभाग आपी शक्तो नथी. सर्वसापेक्षनयदृष्टियोवडे सर्वतत्त्वोना उपहेश हेवाथो जैन धर्मनो प्रचार करी विश्व भनुष्योने हुँध्य सागरमांथी उद्धारी थकाय छे. सर्व सापेक्ष दृष्टियोनी भौतिकायु डुरीने सर्व तत्त्वोनो. जैन धर्ममां समावेश डुरीने विश्ववर्ति भनुष्योने धर्मनो बोध आपी आत्मानी अनन्तशुद्धिमां भेजवा ज्ञेधउ. आत्माना अनन्त गानमां विश्राम पाभवा भाटे श्री वीर प्रक्षुनां तत्त्वोनो सापेक्ष दृष्टिथी सर्व भनुष्यो विचार करे एवा सर्व उपायो करवा ज्ञेधउ. आत्मानी परभात्मता प्राप्त करवा भाटे सर्व सापेक्ष नैगमाहिनयोनी दृष्टियोवडे सर्व तत्त्वोनो विचार करनारायेनो तन भन धनयी भाषाय आपी उत्साहित करवा ज्ञेधउ. जैनागमेनो जैन शास्त्रोना पठन-पाठननी शाणायो काढवाथी उपर्युक्ता सूतकार्य सिद्ध थाय तेम छे.

जैनसंख्यावृद्धया जिनवृद्धिमन्यमानाः

जैनोनी आक्षण्य, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रबेहे वृद्धिथी जिनोनी वृद्धि थेह एवी भान्यताने धारणु करनारा नैगमाहिनये जैनो छाय छे, ने जैनो थाय छे तेग्या जिनो बने छे. जैनामां जैनत्व आवे छे तेनामां जिनत्व आवे छे भाटे जैनोनी सांघ्या वृद्धि करवाथी जिनोनी वृद्धि भानवी ज्ञेधउ. एक

૨૦

જૈનોપનિષદ્.

નવા જૈનને ખનાવવાથી સિંહાચલના ઉદ્ધાર જોઈશું ઇલ થાય છે. જૈનો પર તીર્થોની અસ્તિત્વાનો આધાર રહેલો છે. જૈન થયેલા મનુષ્યોમાં એકદમ્ સર્વ ગુણો ઝોળી શકે એવો નિયમ નથી, પરંતુ શનેઃ શનેઃ ગુણો ભોલનીને તે ક્રેટલાક લવે જિન અને છે માટે જૈન સંઘાની વૃદ્ધિમાં જિન વૃદ્ધિની અંદ્રામાન્યતા ધારવી જોઈએ અને એવી માન્યતાથી જૈનોની સંઘા વૃદ્ધિના સર્વ વિચારોને અને પ્રશ્નતિયોને સેવવી જોઈએ.

ત્રતિવર્ષમહાસંઘપૂજાવાત્સલયકારકાઃ

વર્ષ વર્ષ પ્રતિ અતુલિધ મહાસંધની પૂજન અને તેનું વાત્સલય કરનારા ગૃહસ્થ જૈનો હોય છે. મહાસંધનાંથી તીર્થાંકરો પ્રગટે છે. તીર્થાંકરો પણ મહાસંધને જ્યે છે. મહાસંધના સમાન કોઈ વિશ્વમાં મહાન નથી. મહાસંધની પૂજન કરવાથી તીર્થાંકરાઓ પદ્માંગ્રાની પ્રાપ્તિ થાયું છે. વલ્લ, ઇલ, નાણું વગેરેથી મહાસંધનો પૂજન કરવી જોઈએ. મહાસંધનું વાત્સલય કરવાથી ને ઇલ પ્રાપ્ત થાય છે તેની બરોઅન્ન અન્યધમેરીનું ઇલ આવી શકતું નથી. મહાસંધનમાં સર્વ ગુણોના વાસ થાય છે. મહાસંધનું વાત્સલય કરવાથી કાટિબોનાં પાણે તુર્ટ ટળી જય છે. ગમે તેવા પાણીનો પણ મહાસંધની પૂજન કરવાથી ઉદ્ધાર થાય છે. મહાસંધનમાં પરમાત્માઓ, દેવતાઓ વગેરે સર્વો વસે છે. અતુલિધમહાસંધની આશાનો લોય કરવાથી કોઈનું ત્રૈય: થતું નથી. મહાસંધની પૂજન ઇને દરેક જૈને પોતાના જન્મનો લહાનો કેવો જોઈએ. મહાસંધનમાં આચાર્ય ઉપાધ્યાય સાધુ સુખ્ય છે, માટે તેઓની સેવા પૂજન વિશોપનાં કરવી.

જિનદેવગુરુગુણકીર્તિકરાઃ

જિનહેવ અને ગુરુગુણની કીર્તિના કરનારા ગૃહસ્થજૈનો અને ત્યાગી સાધુઓ હોય છે. જિનનેખરતી અને યુર્દની કીર્તિ થવાથી આત્માની શુદ્ધિ થાય છે. યુર્દની અને દેવની કીર્તિ કરવાથી અભ્યલોકને પણ મોદિથીજની પ્રાપ્તિ થાય છે. ભન, વાણી અને કાયાની શુદ્ધિપૂર્વક આત્માની શુદ્ધિ કરવી હોય તો યુર્દની સદા સુત્તિ કરવી જોઈએ. પુષ્પની પ્રાપ્તિ કરવી હોય તો જિનહેવ અને યુર્દની સદા સુત્તિ કરવી. યુર્દનની પ્રેમલક્ષ્યાં ભક્તિથી અદ્યપકાલમાં સર્વ કર્મના ક્ષય થાય છે અને સુક્ષીની પ્રાપ્તિ થાય છે.

जैनोर्जानण्ड.

३१

यथाशक्तिसम्यक्त्वपूर्वकव्रतधारकः

जैनो यथाशक्ति सम्यक्त्व अने सम्बद्धत्वपूर्वक मतने धारणु करनास होय छे. व्यवहारसम्यक्त्वने धारणु करवाथी निष्पत्तिसम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे. व्यवहारसम्यक्त्व करणु छे अने निष्पत्तिसम्यक्त्व कार्य छे. अतो धारणु करवानी शक्ति न भीली होय तो व्यवहारसम्यक्त्वने अंगीकार करत्वा. भारतवेदाथी यथाशक्ति जैनोर्जे प्रत धारणु करवा. एह वत अंगीकार करत्वा. ए प्रत अंगीकार करवां धृत्यादि व्रतोभां स्वशक्तिनो घाल करनो. गुहरथनां वत धारणु करवाथी साधुवान्मत अंगीकार करवानी अंगीकार भोवे छे. क्वाहने पूर्वभवना संस्कारथी अंगीकार करवानी अंगीकार भोवे छे माटे यथाशक्ति प्रत धारणु करवा. कुनै भ्रुते आम्हां कहु छे.

जन्ममस्थावरतीर्थस्थितिः

आचार्यो, उपाध्यायो, साधुओ अने साध्वीओ आवडो अने आविकाओ जंगम तीर्थ छ अने तीर्थकरो वगेरेनां कल्याणुका ज्यां थयां होय, युद्धोन् साधुओ ज्यां सुक्ति पद पाभ्या होय, ध्यानीयोगी साधुओओ ज्यां ध्यान अर्थां होय, ते लूमिने स्थावरतीर्थ कलेवाय छे. जैनो जंगम अने स्थावर तीर्थोनी आराधना करनारा होय छे. श्री निनेथरनी प्रतिभायो, सिद्धाच्छाहि तीर्थोनी आराधना करनारा जैनो होय छे. प्रति वर्ष जंगमतीर्थीनी अने स्थावरतीर्थीनी आराधना करवी जोधओ. जैनधर्माचार्यो, उपाध्यायो वगेरे जंगमतीर्थीनी आराधना करवी जोधओ. युद्धोनां दर्शन करवा प्रतिवर्ष यात्राये जवुं. साधुओनी यात्रातुं तुर्त इक्ष थय छे. साधुओनी, जैनाचार्योनी यात्रा करीने तेमनी पासेथी आत्मगान प्राप्त करवा खास लक्ष्य राखवु जोधओ. स्थावर तीर्थीनी विधिपूर्वक आराधना करवायी आत्मगुणा प्रकटे छे.

जैनधर्मचार्योपदिष्टधर्मकर्मरताः

जैनधर्मचार्योओ उपहित के के धर्मकर्मो होय तेने स्वाधिकारे करवाभां जैनोर्जे ग्रेमी अनवुं जोधओ. श्री तीर्थकरनां आगमोनां रहस्योने आचार्यो सारी रीत जाल्यी शक्ते छे. तेमना वयनोपर शब्दा राखीने डुर्तह शंकाओने दूर करी तेमनी आयातुसारै आत्मानी परमात्मता प्रणगावध्य

માટે ધર્મકર્મો કરવાં નોંધાયે. જૈન ધર્મનાં તત્ત્વામાં તર્કની પરંપરા કરવાથી કંઈ હિત થતું નથી, પરંતુ જૈનાચાર્યોની આત્મ પ્રમાણે ધર્મકર્મ કરવામાં આત્મશુદ્ધિ થાય છે. જૈનાચાર્યોની આત્મ પ્રમાણે ધર્મકર્મ કરવામાં હિત સમાચું છે, પરંતુ શાંકા તર્કો કરવામાં હિત નથી. જેઓ તર્કો પર તર્કો કરે છે તેઓનું ટેકાણું પડતું નથી અને તેઓ કર્મચારીએ બધ્ય થાય છે માટે અહીં વડે સ્થિર પ્રણા પ્રાપ્ત કરી આચાર્યોપદિષ્ટ ધર્મકર્મનાં સ્વાધિકારે લયલીન થતું નોંધાયે.

જૈનધર્મરક્ષાર્� સર્વોપાયૈઃ પ્રવર્તકાઃ

જૈન ધર્મની રક્ષાથો દ્વય ક્ષેત્રકાલભાવથી સર્વોપાયોવડે પ્રવૃત્તિ કરનારા જૈનો હોય છે. હાલ જૈન ધર્મની રક્ષા કરવાનો ખાસ પ્રસંગ આવેલ છે. અન્યધર્મોમાં જૈનો ભણી ન જાય એ ખાસ લક્ષ્યમાં રાખ્યું નોંધાયે. અન્યધર્માનો તરફથી જૈન ધર્મનું ખંડન કરવા માટે જે ને કેબો અન્યો લખાતા હોય તથા જે ને ઉપદેશ હેવાતા હોય, જે ને યુક્તિયો વડે તથા પ્રવૃત્તિવડે તેઓ જૈનધર્મનું ખંડન કરતા હોય તે જાણ્યું અને તેના સામાન્ય ઉપાયો હોય તે આચારમાં સુઝાને જૈન ધર્મની રક્ષા કરવી. જૈન ધર્મની રક્ષાર્થ પૂર્વકાલમાં જૈનો ઉદ્યુક્ત રહેતા હતા. જૈન ધર્મની રક્ષાના ઉપાયો છે તે રાજ્યરક્ષાના ઉપાયો જેવા ગુપ્ત અને અગુપ્ત છે. તે તે કાલે ઉત્પન્ન થનાર ગીતાર્થ ધર્મ ધૂરંધર ધર્મચાર્યો વગેરે જૈન ધર્મની રક્ષાના ઉપાયોને જાણ્યો શકે છે. જૈન ધર્મની રક્ષાના ઉપાયોને આદરનાર ચ્યત્રવિધ મહાસંધ છે. તથા જૈન આદિષુ, જૈન વैશ્ય, જૈન ક્ષત્રિય વગેરે જૈન વર્ણ છે. જૈન ધર્મની રક્ષા માટે દીન ધર્માનોની પેડે ખરા જૈન ધર્માનો આત્માર્પણું કરે છે. જે ધર્મ તન મન ધન વોરેતું અર્પણું કરે છે તે જૈન છે. આત્મભોગી સર્વોપાયોવડે જૈન ધર્મની રક્ષા કરી શકે છે.

જૈનાનો પ્રગત્યર્થ સર્વશક્તિપ્રવારકાઃ

જૈનો, સ્વસમાનધર્મો જૈનોની પ્રગતિ માટે સર્વ શક્તિયોનો પ્રચાર કરનારા હોય છે. જૈનો ધર્મના જીતા હોય છે. જૈનોની ઉન્નતિ થાય એવાં સર્વ કાર્યોમાં જૈનો, શિદીશ વીરનરેલી પેડે રાત્રિ હિવસ ભાગ દે છે. જૈનોની ધ્યાનિકાન્નતિમાં જે ને કૃપાયો થાય છે તે તે પ્રશસ્યકપાયો કહેવાય છે અને તેથી

जैनोपनिषद्.

२३

तेवा शुभकथायोधी शुभपरिणामयोगे पुष्ट्यध्य थाय छे. जैनोनी उन्नति थाय एवां शुभकथेभां वपशता मन, वयन अने कायाला व्यापारने शुभयोग व्यापार कहेवामां आने छे. जैनसंघनी पासे जे ने शक्तियो होय ते ते सर्व शक्तियोने जैनोनी उन्नति भाटे वापरनी जेठमे. जैनोनी पासे जे कृध छे. ते जैनोनी प्रगति भाटे वापरवानु छे. जे लोडो भेंज शाख व्यसनोभां आसक्ति धाराने पोतानी शक्तियोनो हुइयेग करे छे. ते लोडो अवन्नतिना आडामां पोताने तथा पोतानी संततिने उतारे छे. भाटे जैनोमे ए प्रभाणे समग्रने समूहीकृत सर्व शक्तियोना व्यये जैनोनी उन्नति करनी जेठमे उल्था शक्तियोना व्ययथी जैनोन्नति थतां विशेष शक्तियोवडे जैन कोभनो सर्व ऊणहणी शडे.

ऐक्येन संघबलरक्षकाः

जैनोमां गच्छाहि भेदो होवा छतां जैनो क्षेत्रकालातुसारे संपवडे संध बलतु रक्षणु करनारा बने छे. जे धर्मालिमानी समयरु जैनो होय छे ते कुपि संधबलनो नाश थाय एवा शारदुखुनी प्रवृत्तिने भान आपता नथी. हुनरो भतभेदो छतां संधबल रक्षामां संपवनो तेओ त्याग करता नथी. संधबलतु एवी वयो रक्षणु थाय छे. संधनी सतानो नाश थाय एवा जे पगलां भरे छे ते संधनो चा. तीर्थकरनो द्रोही बने छे. संधबलतु रक्षणु थाय एवां औक्यकरक जे कारों करे छे ते संधनो अने तीर्थकरनो भक्त छे. जैनोना सर्वगच्छमतपयोभां रहेनारने साम्यभावयी संधबल रक्षक क्षेत्रीयी मुक्तिप्राप्त थाय छे. औक्यनो नाश करवामां जे पोताना अशुभ विचारो अने प्रवृत्तियोनो प्रचार करे छे ते धर्मनो विरोधक बने छे. औक्य वडे संधबल रक्षक जैनो स्वर्ग अने मुक्तिइलने प्राप्त करे छे. दैरक भतुष्ये पोतानी जातनु अपमान सडी लेवुं पछु संधबलनो नाश थाय एवुं पगलुं न भरवुं. संधनो द्रोह करवायी भणापापकर्मनो व्यध थाय छे. भाटे कडि संधदोही न व्यनवुं जेठमे. औक्यवडे संधबल रक्षणुमां जे जे उपायो देवा धटे ते देवा, अने जे जे आत्मेभोगो आपवा धटे ते आपवा, परंतु जैनोमे संधबल रक्षणु करवुं एज हितशिक्षा छे. संधबल विना जैन कोभनी अडती थती नथी. भाटे गमे ते उपायो वडे संधबलतु रक्षणु करवुं.

વર્તમાનકાલસેત્તાનુસારેણ જૈનાનાં વૃદ્ધાર્થ રાજ્યરક્ષોપાયવદાપ- દ્ર્મકર્મભિઃ કર્મયોગિનઃ વર્તન્તે ॥

જૈન કર્મચારીઓ વર્તમાનસેત્ત કાલાનુસારે જૈનોની ચાતુર્વિંદીક સંખ્યા વૃદ્ધિ ભાઈ આપહ ધર્મવડે જેમ રાજ્ય રક્ષણના ઉપાયો કેવામાં આવે છે તેની પેઠે આપહધર્મના નિયમોને અનુસરી આપહધર્મકર્મવડે પ્રવતે છે. પૂવ ના કાલમાં અને વર્તમાનમાં ધણો ઝેરદ્વાર થયો છે. આજીવિકા વળેરેનાં સાધનોમાં પણ ધણો ઝેરદ્વાર થયો છે. હવે તો આપહધર્મકર્મવડે જૈન સંખ્યા વૃદ્ધિ અથ્ય કર્મચારીઓ પ્રચતિ કરી શકે છે. રાજ્યરક્ષણને ભાઈ આપતકાલે જેમ આપવાદિક કાયદાઓના અનુસારે ઉપાયો કેવામાં આવે છે તેમ જૈનોના રક્ષણ ભાઈ આપતકાલમાં જૈનોની વૃદ્ધિ ભાઈ આપે તેવા પ્રકારના આપવાદિક ધર્મકર્મોના ઉપાયોને આચયરી શક્યા છે તેમાં દોષ નથી પણ ધર્મ છે.

જૈનધર્મગુરુકુલોદોત્કા:

જૈનધર્મનું શિક્ષણ અદ્ધા આપનારાં જૈનશાસ્ત્રોનો પરિપૂર્ણ અભ્યાસ કરાવતારાં એવાં જૈનધર્મ ગુરુકુલોના પ્રકાશક જૈનો હોય છે. જૈનગુરુદ્ધર્થ ગુરુકુલ, જૈનશાનિકા ગુરુકુલ, જૈનસાધ્વી ગુરુકુલ, જૈનસાધુ ગુરુકુલ એ ચાર પ્રકારનાં ગુરુકુલોનો ઉદ્યોત કરવાની ખાસ જરૂર છે. જૈનધર્મનું શિક્ષણ આપેને જૈનધર્માબિભાગ, જૈનધર્મની પૂર્ણ અદ્ધા ઉત્પન્ન કરે અને જૈનો અન્ય ધર્મચારીની સાથે ધર્મ સ્પર્ધામાં જીનયર્યાંના પાછળ ન પડે એવાં ગુરુકુલો સ્થાપણાં જોઇએ. આર્થ સમાજાઓ વળેરેની પેઠે જૈન કોમ જે હાલ સેવેણ નહીં ચેત તો ધર્મની અનુભૂતિ અનીને જૈન કોમ લક્ષ્યી સતત છતાં ધર્મભૂષ્ટ અની જરૂર. ધર્મવિદ્યા વિનાની એકલી કર્મવિદ્યાથી આત્મોનનતિ થતી નથી. લાયો કરોડા ઇપૈયા અન્ય બાધ્યતાઓના ઘર્યાય છે તેમાંથી ધર્માદ્ધારીને જૈન ધર્મનાં ગુરુકુલો સ્થાપણે સેમાં જૈન ધર્મનાં શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કરાવવામાં લાયો. કરોડા ઇપૈયાનો અર્થ કરવામાં હવે જરા ભાત્ર પણ વાર ન લગાડવી નોંધાયો. ચાર પ્રકારનાં જૈન ગુરુકુલો એ ચાર પ્રકારનાં જંગમ તીર્યો જાણુને તેની પુષ્ટિ કરવામાં તન, મન ધનનો આત્મભોગ આપવો નોંધાયો. વિદ્યા લક્ષ્યી છતાં જૈનધર્મનું પૂર્ણ શાન પ્રાપ્ત કર્યા વિના જૈનોમાં ધાર્મિક જીસ્સો ભીલી શક્વાનો નથી. શરીરમાં વીર્ય ન હોય તો જેમ જરીરનો

जैनोपनिषद्.

२५

नाश थाये छे. तेमज शरीरभायी आत्मा जरां शरीरनी बेनी हसा थाये छे तेवी जैन क्रमभांशी धार्मिकग्नान, धार्मिक जुस्सो नष्ट थतां हसा थाये छे. माटे थतुर्विंध जैनकोमे हवे चार प्रकारनां जैनथुइकुलो स्थापीने पीतानी आडेजलाली प्रगटावनी ज्ञेधये.

साधमिकार्थ सर्वस्वार्पणकारकाः

जैनोना गमे तेला क्रिकाये होय, गमे तेला गष्ठो होय, गमे तेला संधाडा होय, परंतु जिनां कथितत्वेन माननारा जैनो एक सरभा परस्पर सभान धर्मवाला अङ्गुये छे. जैनोना नसेनसभां भहावीर प्रलुना धर्मनो जुस्सो उज्जें छे, लां सगां वहालां संखंध करतां धर्मनो संखंध विशेष होय एमां कुर्द्ध आश्र्य नशी. जैनोये परस्पर एक धीजनी साहाय्य करवा माटे सर्व शक्तियेतुं स्वार्पणु करवुं ज्ञेधये. श्री भहावीर प्रलुना धर्म लुंडा हेठुं सर्व जैनोये संभाने एकडा थधते परस्पर एक धीजना आत्माने माटे प्राणार्पणु करतां जरा भान अचकावुं न ज्ञेधये. साधमिका पर आवी पडेलां हुःभोने हूर करवां ज्ञेधये. साधमिकाने धनाहिकनी साहाय्य करवी ज्ञेधये. साधमिकाने आज्ञविका वगेरेनां साधनोमां पूर्ण भद्र करवी ज्ञेधये. साधमिकानां कथीं करवामां कर्मयोगी अनवुं ज्ञेधये. साधमिकाने भयाववामां तथा व्यापार वगेरेमां भागेली भद्र आपवी ज्ञेधये. प्रकट करतां साधमिकाने युप्त रीते विशेष साहाय्य आपवी ज्ञेधये.

क्षेत्रकालानुसारेण ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्र

कर्मभिराजीविकावृत्तिधारकाः

जैनो क्षेत्रकालानुसारे आक्षयु, क्षनिय, वैश्य अने शूद्र कर्मोवडे आज्ञविका वृत्ति धारणु करनारा अने छे. विघावडे शिक्षक जनी, ग्रेहिसर जनी आज्ञविका वृत्ति यत्वाववी सेवानां द्वार्यत थध वीर योद्धाने भाजतां कर्मोवडे कुंभाहिनी आज्ञविका यत्वाववी ते क्षात्रवृत्ति गण्याय छे. अनेक प्रकारनी फुन्नरक्का, शिल्पक्का वगेरे वडे आज्ञविका यत्वाववी, कृषिकर्मवडे आज्ञविका यत्वाववी ते वैश्यवृत्ति गण्याय छे. गायो वगेरेन पाणी आज्ञविका यत्वाववी ते वैश्यकर्मवृत्ति गण्याय छे. आक्षयु, क्षनियो, राजग्रीयो, वैश्यो

वगेरेनी नोकरी करीने आणुविका चलाववी ते शुद्धर्भविति जाणुवी. नीतिसर गमे तेम वृत्ति करी जैनोचे आणुविका वृत्ति चलाववी. दाढ, भांस, कन्या विक्रय वगेरे पापकर्मवडे आणुविका चलाववी नही. नीतिपूर्वक धर्मो करीने उद्धरनिर्वाह करवे. अने वप्तसर देवशुद्धनी आराधना करवी. चारे वर्षोंचे नीतिसर धर्मांचा करीने कायातुं पोषणु करवुं परंतु लीभ माझाने वा देव-द्रव्य, शुद्धद्रव्यतुं लक्षणु करीने ज्ञववुं योग्य नथी. आपत्तिकावे आपवाहिक कर्मेवडे धर्मार्थे आणुविका चलाववी ज्ञववुं.

गृहस्थगुरुणां त्यागिगुरुणां घ यथायोगं भक्तिकारकाः

जैनोभां प्रतिष्ठाभां डेटलांक कार्ये तथा सोजसंस्कार पैकी गृहस्थ योग्य संस्कार करावनारा जैनधर्मपालक गृहस्थ शुद्धेचो होय छे, तेमानी त्यागी शुद्धेचो लेटली महता नथी. गृहस्थयुद्ध करतां त्यागी शुद्धेचो अनंतशुद्धा भोटा छे. गृहस्थनी दशा प्रभाणे जैनगृहस्थशुद्धेचोनी गृहस्थ जैनो भक्ति करे छे. अल्पाचारी आवडो, वार व्रताचारी आवडो अने जैन आलणो गृहस्थ शुद्ध भनी शके छे. गृहस्थ जैनोचे जैन गृहस्थ शुद्धेचोनी भक्ति करवी ज्ञेधचे. जैन गृहस्थ शुद्धेचो व्याकरण, न्याय वगेरे शास्त्रोनो अभ्यास करे छे अने जैन धर्मनी सत्यता बदावे छे. अन्य धर्मना वादीचो साथे वाद करीने जैन धर्मनी सत्यता सिद्ध करी अतावनारा गृहस्थ शुद्धेचोनी भक्ति करवी ज्ञेधचे. भारवाडभां जैन सेवक आलणो, लोजकआलणो वगेरे गृहस्थ शुद्धेचो भनीने जैन धर्मना संस्कारो वगेरे करावे छे. भोजडो सेवकी आलणोनां आणकेने जैन शुद्धकुलेभां जैन शास्त्रोनो अभ्यास करावी खरा जैन पुनः तेमानो उद्धार करवे ज्ञेधचे. भोजडो तथा सेवकी आलणो के जैनो जैनधर्माभिमानी होय तेमाने के लेथी जैनधर्मचावडे जिनोपवित आहि संस्कारोवडे संस्कारित करवा ज्ञेधचे पक्षात् तेमा अन्य जैनोने जिनोपवित आहि संस्कारोने जैनमंत्रा द्वारा करावला समर्थ थाय. आचार्यो, उपाध्यायो, साधुचो, त्यागी शुद्ध कुलेवाय छे. त्यागी जैनाचार्य सर्व जैन क्रामना जगहशुद्ध अनी शके छे भारे तेमानी पूर्ण प्रेम अक्षाथी दररोज भक्ति करवी ज्ञेधचे.

देशराज्यधर्मकर्मभिः प्रगतिकारकाः

जैनो हेशानन्ति, हेश सेवाभां भाग लाई शके छे. स्वजन्म भूमि हेशनी

सेवा करवामां भाग आपवो ए श्वर्धम् छे तेनाथी जैनोओ कहि प्रष्ट न अबुं ज्ञेष्ठओ. राज्य अने राजना कार्यमां प्रधान कारभारी आहि पहो प्राप्त करीने देश सेवाहिमां भाग देवो ज्ञेष्ठओ. देश धर्म अने राज्यधर्मकर्मी करवामां स्वाधिकारे दैक जैने प्रवृत्ति करवी ज्ञेष्ठओ. प्रवृत्ति भागमां परिपुन थया विना निवृत्ति भागनी संरक्षा तथा आराधना थध शक्ती नथी. निवृत्तिस्प क्षेत्रने रक्षणाने प्रवृत्ति छे, ते वाइना जेवी छे. प्रवृत्ति द्वारा निवृत्तिनी आराधना करवी. देशकार्यमां, राज्यकार्यमां अने धर्मकार्यमां सदा लाग देवो ज्ञेष्ठओ. नेणु डामनो, संघनो, शातिनो अने समाजनो उद्य करवो हेय तेणु देश सेवामां, राज्य सेवामां अने धर्म सेवामां अथगामी अनबुं ज्ञेष्ठओ. देश राज्य धर्मकर्मीवडे स्वपत्नी प्रगति करी शक्त छे भाटे जैनोओ उपर्ना सूतनो उंडा अनुबव करीने प्रगति करवानां उपर्कुटा कर्मी करवां ज्ञेष्ठओ.

अनेकान्तब्रह्मधर्माधकाः

अनेकान्त दधिष्ठे, अहं, आत्म, परमात्माना अनन्त सानाहि कर्मीनी आराधना करनारा जैनो अने छे. व्यवहारन्य अने निश्चयनयथी अलधर्मतुं स्वरूप समज्यबुं ज्ञेष्ठओ. अनेक नयेनी अपेक्षाओ अल धर्म अर्थात् आत्माना सानाहि धर्मीनी आराधना करवी ज्ञेष्ठओ. शरीर धर्म; वाणी धर्म, अन धर्म अने आत्मनो धर्म ए यारेमां आत्माना सानर्दनन्यारित धर्मज्ञ उत्तम छे. आत्मज्ञान पाभ्या विना अने आत्मचारित्र पाभ्या विना साचा सुखनी प्राप्ति थती नथी. आत्मामां ने ज्ञेष्ठओ ते छे. आत्माने अनेकान्तपछे अनुबवो. आत्मा करतां आ विश्वमां क्षेष्ठ भानुं नथी आत्मा तेज परमात्मा छे. आत्मामां अस्ति नास्तिपछे अनेकान्तनये सर्व विश्व समाय छे भाटे आत्मधर्मनी जैनोओ आराधना करवी ज्ञेष्ठओ. आपडाना बार व्रत वडे, साधुना पंच व्रतवडे योगना अष्टांग वडे, आत्मानी शुद्धि करवी ज्ञेष्ठओ.

द्रव्यभाववैरिजयेन सार्थकनामधारकाः

ने द्रव्यवैरिये, अने भाववैरियेने जुते छे परंतु द्रव्यवैरियेथी अने भाववैरियेथी हारता नथी ते जैनो क्षेष्ठवाय छे. ने भयरील, धीक्षु नाभीं छे ते जैन नामने सार्थक करी शक्तो नथी. ने जैनो अन्य जैनाथी संपमां, शक्तिमां, व्यापारमां, धर्मकर्मीकरवामां हारी जय छे ते जैनत्वने

લક્ષ્ય છે. જે શત્રુઓને અતનારા છે તેજ શત્રુઓના તાણે થઈ જાય કે જૈનો ગણ્યી શક્તિ નહિ. વૈશિષ્ટેન અતનારા લોડો જૈન ગણ્યામ છે—કોઈ પણ કાર્યમાં જય મેળવનો તે જૈનની સુષ્પ્ય ફરજ છે—જે દ્રષ્ટ્યાજૈન બની શકતો નથી તે ભાવજૈન બની શકતો નથી. તીર્થાકરો પ્રથમ દ્રવ્યખુણ અન્યા હતા પણ આતુ તેઓ ભાવજિન અન્યા હતા, અપન્યા આપનારા વિચારોનો અને પ્રકૃતિયોનો જે અનુયાયી બને છે તે જૈન બની શકતો નથી. બ્યવહારથી અને નિષ્ઠયથી વિજયકારક જે જે વિચારો અને જે જે કાર્યો હોય છે તેનો જે અનુયાયી બનીને સર્વ કર્મ કરવામાં વિજય બને છે તે જૈન ગણ્યાય છે. દુર્ઘટાં પર, દુષ્પ વ્યસનોપર જે વિજય મેળવે છે તથા ભરાય વાસનાઓ પર જે વિજય મેળવે છે તે જૈન નામને સાર્થક કરે છે.

પ્રશસ્યવ્યાવહારિકધાર્મિકશક્તિસમ્પન્નાઃ

પ્રશસ્ય વ્યાવહારિક શક્તિયોવડે અને પ્રશસ્ય ધાર્મિક શક્તિયોવડે સંપત્ત જૈનો હોય છે. પ્રશસ્ય આર્થિક શક્તિયો, પ્રશસ્યકાયિક શક્તિયો અને પ્રશસ્ય વિદ્યા શક્તિયો વડે યુક્ત જૈનો હોય છે. સર્વ પ્રકારની પ્રશસ્ય શક્તિયોને મેળવનાર જૈનો હોય છે. સંસાર બ્યાવહારમાં જે જૈનો રહે છે તે જૈનાએ પ્રશસ્ય બ્યાવહારિક શક્તિયો. મેળવની જોઈએ. પૂર્ણ લોગી જે ત્યાગી અને છે તો તેજ પૂર્ણ યોગી, પૂર્ણ ત્યાગી બની શકે છે. બ્યાપારનાં સાધેસાની શક્તિયો, વિદ્યાની શક્તિયો આદિ સર્વ પ્રકારની શક્તિયો. મેળવ્યા વિના જૈનો શક્તિ સંપત્ત રહી શકતા નથી. નેરલી પ્રશસ્ય બ્યાવહારિક શક્તિયોની જરૂર છે તેના કરતાં પ્રશસ્ય ધાર્મિક શક્તિયોની અનંત ધાર્યી જરૂર છે. ધાર્મિક શક્તિયો. મેળવ્યા વિના ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ એ ચાર વર્ગની ગૃહસ્થ જૈનો આરાધના કરી શકતા નથી. માટે ધર્મની શક્તિયોથી સર્વથા સુધી સ્વતંત્ર રહેવાય છે એમ સમજ ધાર્મિક શક્તિયો. વડે, કુદુર્ય, કોમ વગેરેને યુક્ત કરવી જોઈએ.

પञ્ચમારકેડનાર્થધર્મભ્યો વિજેષવિદ્યાસત્તાધનબલવીર્યાદિભિ: જીવનોપાયવિચારકર્મસુપરાયણાઃ ॥

પંચમારામાં—કલિયુગમાં અનાર્થ ધર્મયોથી—અર્થાત્, જે લોડો રહેશુધી તમેશુધી તથા અન્યાય પાપ કર્મ વગેરેથી અતનારા છે તથા નીતિ

પરાયણ શલ્યાનો તથા દોડાનો નાશ કરવાના સ્વભાવવાળા છે તથા દોડાનો નાશ કરવામાં ને ધર્મ માને છે એવા અનાર્ય ધર્મગ્રામો કરતાં વિરોધ ક્ષાત્ર બ્લ સત્તા વિદ્યા ધન, શારીરિક બ્લ અને ભાતસિક આત્મિકબ્લવડે દ્વય જીવનથી તથા ભાવશ્લુનથી જીવવાના ઔતસિંગ તથા આપવાદિક વિચારોમાં અને ક્રોદ્ધાનો ને તત્પર રહે છે તે જૈનો બની શકે છે. અનાર્ય ધર્મગ્રામો કરતાં અધ્યાર્થ ધર્મગ્રામાં જીવન ઉપાયનું વિરોધ બળ હોવું જોઈએ કે જેથી દુષ્પ પાપી મનુષ્યોના હાથે ધર્મ મનુષ્યોનો નાશ ન થાય. અનાર્ય દોડાની વિરોધ શક્તિ હોય છે તો તેઓ ધર્મનીતિ પરાયણ મનુષ્યોનો નાશ ફરે છે માટે આર્થ જૈનોએ અધર્મગ્રામો કરતાં વિદ્યાધન સત્તા બળ વીર્યની વિરોધ શક્તિ મેળવીને બ્યવહારજીવને તથા ધર્મજીવને જીવવું જોઈએ.

ઉદારવિચારધારકાઃ

રાજ્ય સંખ્યાધી, દેશ સંખ્યાધી, આજીવિકા વૃત્તિ સંખ્યાધી, ધર્મ સંખ્યાધી નીતિભય વિશાળ વિચારોને અને વિશાળ આચારોને ધારણું કરનારા જૈનો હોય છે. સાંકડા વિચારોથી અને આચારોથી દેશની, ડેશની, ગુરુત્વની, સંધની અને ધર્મની પાયમાલી થાય છે. ધર્મ પરતે સાંકડા વિચારોથી અને આચારોથી ધર્મનો નાશ થાય છે. અર્વાચીન જૈનોના ધર્મ સંખ્યાધી સાંકડા વિચારોથી અને આચારોથી ચારે વર્ષુમાંથી ઇકત જૈનધર્મ પાળનારી એક વૈસ્ય જાતિ રહી, વૈસ્ય જાતિમાંથી પણ ઇકત એક વખ્યિક જાતિ રહી. વખ્યિક જાતિના ચોશશાલેદો પૂર્વે જૈન હતા, તેમાંથી હવે તો કેટલીક વખ્યિક જાતિએ જૈનધર્મ પાળનારી રહી. ઉદાર વિચારવાળા અને ઉદાર આચારવાળા જૈનો અન્ય જાતિયોને જૈનધર્મમાં સમાવી શકે છે. અને જે કાલે જે રીતે જૈનકોમની સંપ્રાય વધે એવા ઉદાર વિચારોથી અને ઉદાર આચારોથી અન્ય મનુષ્યોને જૈનધર્મ પાળનારા બનાવી શકે છે. ઉદાર વિચારોનું અને આચારોનું સાંધ્ય બિંદુ સ્વતંત્રતા પ્રગતિ વરેરે છે, જૈનકોમની ઉન્તતિ થાય એવા ઉદાર વિચારોને અને આચારો ને ધારણું કરવામાં ધારણું સહજું પડે છે. હૃદયને ઉદાર કરવું પડે છે. જમાનો અને ઉન્તતિના ઉપાયોને હૃદય સામા જોવા પડે છે. સ્વાર્થનો ત્યાગ કરવો પડે છે અને પરમાર્થ માટે હૃદયનાં દાર ખુલ્લાં કરવાં પડે છે. સર્વ મનુષ્યોના વિચારોની ઉન્તતિ સામું જોવું પડે છે. સ્વાહંઘ નહીં પરંતુ મનુષ્યોની સ્વાધિકારે સ્વતંત્રતા કેવી રીતે હોય છે તેનો અતુંભવ કરવો પડે છે. ઉદાર વિચારો માટે અને ઉદાર આચારો માટે સુધારા

વધારા કરવા પડે છે. જૈનસાધુઓના ભૂલતોની સાથે વિહારાપદેશાદિ પ્રચૂણ તિમાં જૈનધર્મની વૃદ્ધિ થાય એવા ઉદાર ભાવથી પ્રદૂતિ થવી જોઈએ. જૈનસાધુઓ, જૈનાચારો સર્વત્ર સર્વદેશમાં વિહાર કરીને સગનકતા પૂર્વક ઉપરેખ આપી શકે એવા ઉદાર વિચારોને અને આચારોને જીમાનાના અનુસારે ધારણું કરવા જોઈએ. ઉદારવિચારાચારથી જૈનોની સર્વ ભાગતમાં વિશાળતા થાય છે. ઉદાર વિચારાથી સ્વતંત્રતાની પ્રાપ્તિ થાસ છે. ઉદારશરોથી ઉદાર થવાય છે. જૈના ઉદાર આશયો નથી તેની પરંપરામાં ઉદારતા આવતી નથી. જૈના ઉદાર આશયો છે તેના ધર્મમાં અન્ય મનુષ્યો ભગે છે. જૈનધર્મના આચારોમાં ઉદારતા સમાયલી છે તથા જૈનધર્મનાં તત્ત્વોમાં ઉદારતા સમાયલી છે. દુનિયામાં પ્રવર્તિતા સર્વધર્મોને અનેક ઉદારસાપેક્ષાદિયોથી પોતાનામાં સમાવી હેનાર જૈનધર્મની અંતર ઉદારતાને કોણું પ્રાપ્ત કરી શકે તેમ છે? જેઓ વિતપ્ત્યાઘ્યાન ન કરી શકે તે હેવગુરુની ભક્તિ કરીને ચતુર્થ શુષ્ણ સ્થાનકાવતિ જૈનો તરીકે રહી શકે અને ને એકાદિ આણુષ્ટાધારણું કરી શકે તે આણુષ્ટાધારી જૈનો કથી શકાય. સાધુઓનાં વ્રત ધારણું કરે તેઓ મુનિયો કથી શકાય ધ્યાન અધિકાર પરતે ઉદારતાથી મુક્તિમાર્ગની બ્યાઘ્યા કરનાર જૈનધર્મ છે. સર્વ જૈનોનો એક સરખો વિચાર અને એક સરખો આચાર હોતો નથી. અનેક સ્વતંત્ર્યને સંરક્ષનાર જૈન ધર્મ છે. જૈનધર્મનું ઉદાર સ્વરૂપ છે. જૈનધર્મનું સ્વરૂપ જાણ્યા વિના હાલમાં કેટલાક પ્રવર્તિતા સંકુચિત વિચારાચારોથી જેઓ જૈનધર્મની સંક્રાંતિના સમન્વયે તેઓ તેઓ ઉદાર વિચારમય તથા ઉદાર આચારમય જૈનધર્મનું સ્વરૂપ જાણ્યું જોઈએ. અને સત્ય જૈનો અની ઉદાર વિચારાચારધારક અનુભૂં જોઈએ.

આર્થનીતિરીતિરક્ષકાઃ

આર્થ જૈનો આર્થ નીતિરિતિના રક્ષક હોય છે. સનાતન આચ્છાદિ જૈનો છે તેઓ ઋષભદેના સમયથી આર્થ હિંદુસ્થાનમાં વસનાર છે. કેટલાક લોકો મધ્ય એશિયાઅંડમાંથી હિંદુસ્થાનમાં આવ્યા તે વખતનું ઋષભદેનિંદ્રાદ્વારામાં વર્ણાનું છે. ઋષભદેના ઋષિયો કરતાં હિંદુસ્થાનમાં પૂર્વકાલથી વસનાર જૈન આર્થોના વહે અનાદિકાલના હતા. કેદ ઋષભદેવ પ્રભુના મુત્ર બરત રાજ્યો વહે અનાબ્યા ત્યારથી જૈનો હિંદુસ્થાનમાં વસેતા હતા તે આર્થ સનાતન જૈનો છે તે આર્થ સનાતન જૈનોના નિગમોમાં અને જૈનાગમોમાં જૈનશાસ્ત્રોમાં આર્થ નીતિરીતિયોનો અનુભવ કરવો

ज्ञेधमे अने तेना सर्व देशाभां उद्धारभावधी प्रवार करवो ज्ञेधमे। आर्य नीतिरीतिथी धर्मनु रक्षणु थाय छे। अनार्यनीतिरीतिवडे ज्ञेधमे विचरे छे तेऽमा आर्य छे एम नाम भावधी जाणुवुँ। आर्यनी मान्यतावडे युक्त जैनशास्त्रे छे भाटे जैनो छे तेज भरा आर्यो तरिके छे। आर्यनी नीतिरीतियेथी आत्मानी शुद्धि थाय छे। रजेगुणु अने तमोगुणानी मुख्यतामे अनार्येनी नीतिरीतिनी मान्यताम्हो जाणुवी ज्ञेधमे। सर्व देशाना भनु-ध्येन सुखशाति, स्वातंत्र्य, आरोग्य आपवाने आर्य विचारो अने आचारोनी मान्यताम्हो प्रथम नंबरे आवे छे। हयाना सत्य सिद्धांतने मुख्यतामे भान आपनारा आर्यो होय छे। श्री जिनेश्वरना भक्तो आर्यो गच्छाय छे। जैन साधुओने जैन शास्त्राभां आर्य अने जैन साधनीज्ञेने आर्यो कहेवाभां आवी छे। आर्य जैनो विद्यानान पराक्रमधी छीन थध नय छे अने ज्यारे तेऽमा भोग्नी प्रकृतियोना दास अने छे त्यारे तेऽमा अनार्येथी ज्ञाय छे। अने तेथी तेऽमा दास शुलाभनी क्राटिमां प्रवेश करे छे भाटे आर्य जैनोज्ञे धार्मिक विचारोने अने आचारोने भान आपीने वर्तवा भाटे विद्यानानवडे बगवान् अनवुँ ज्ञेधमे अने काम, क्राद्ध, लोभ, भत्तर, धर्षाहि हुरुषेणोना नाश करवो ज्ञेधमे। काम लोभाद्विथी भोग्नभजाथी शारीरिक व्यक्तिज्ञितनो क्षम्य करी निर्गुण अफलघीन भायला पान जेवा अनी गयेला जैनोने हुनियाभां उवानो उक रहेवानो नथी। उवे कम्भियागी अन्या विना जैनोने हुनियाभां धार्मिकश्च। तथा व्यावहारिकल्पने ज्ञवानो अधिकार रहेवानो नथी। जैनत्वनी लागायी विनाना अने जैनार्य नीतिरीतिथी भष्ट थमेला जैनोपर तेऽमोना पूर्वजेना शाप पडे छे। भाटे जैनोज्ञे गमे तेवा सधेगाभां जैनपाषुँ न खेवुँ ज्ञेधमे। आर्य जैन नीतिरीतिनो नाश थतो अटकावेले ज्ञेधमे अने तेनो सभयानुसारे योग्य अनी पुनश्चार करवो ज्ञेधमे। ने जैनते जैन नीतिरीतितुँ भान नथी ते पोतानी भाताने लजवे छे। जैन धर्मभां चूस्त अनीने आर्यनीतिरीतिना संरक्षक जैनो अने छे।

“ स्वाश्रयावलम्बिनः ॥ ”

जैनो स्वाश्रयावलभी होय छे परंतु पराश्रयावलभी थता नथी। जैनो स्वाश्रयमने आश्रविकादिसाधनोवडे संपन्न वर्ते छे। ज्ञेधमे स्वाश्रयी होय छे तेऽमा भरेभरा बगवान् अने छे। पराश्रयावलभी भनुओ भडान् अनी शक्ता नथी। ज्ञत भक्ततथी धारेलां कार्यो करीने अभर नाम करी

શક્તાય છે. આત્મભર્તા અને આત્માવલંખન કર્યા વિના પરના આશ્રમથી કહિ મહાન થવાતું નથી. આત્મભળ પીલળિને પ્રત્યેક જૈને સ્વાત્મથી બનતું જોઈએ. અન્યોના આધાર પર જીવવાતું કહિ પ્રેસન ન કરવું જોઈએ. દરેક જૈને વીશ પચીશ વર્ષ પર્યાત શારીરિક વીર્યની રક્ષા કર્માદ સ્વાત્મયાવલંખા થધ ગૃહસ્થાવાસની યોગ્યતા આવે છતે પાણિગણ્ય કરવું જોઈએ. જૈનોએ પોતાના ભાગકેને વીશ પચીશ વર્ષપર્યાત વીર્યરક્ષણુ કરાવવું જોઈએ અને જૈનમંત્રાવડે ગર્ભધાનાદિ સંસ્કારો કરાવવા જોઈએ કે નેથી તેઓ સ્વાત્મયાવલંખા બની શકે. સ્વાત્મયાવલંખા થયા વિના દેશની, કેમની, રાજ્યની, સંઘની, સેવા કરી શકતી નથી તથા જૈનોની પ્રગતિની પ્રયત્નિયોગાં આત્મભોગ આપી શકતો નથી. એક શરો સોને હરાવે છે તેની પેઠે સ્વાત્મયાવલંખા એક જૈન, હણરો પરાત્રયાવલંખાઓને હરાવે છે અને દુનિયામાં સર્વની આગળ આવે છે. સ્વાત્મયાવલંખા જૈનો જૈનોની ઉત્તતિ કરી શકે છે માટે જૈનો ઉડો, જાગો. સ્વાત્મયાવલંખા થાએ અને જૈનોની ઉત્તતિ કરો. પોતાના આત્મભળપર વિશ્વાસ રાખો. અન્યની મદદની આકાંક્ષા ન રાખો, તમે જેસે સર્વ કાર્ય કરો અને જૈનધર્મની આરાધના કરી જૈનોની પ્રગતિ કરો.

કર્મયોગિન:

નિબોપણે અડુંમભતા વિના જૈનો આવશ્યક લૌકિક તથા લોકીતાર કાર્યોને કરે છે. શ્રીકૃષ્ણના ઉપહેશથી અજ્ઞુન કર્મયોગી બન્યો. શ્રી નેમિનાથના ઉપહેશથી નેમ શ્રી કૃષ્ણ કર્મયોગી બન્યા. શ્રી મહાવીર પ્રલુના સહુપહેશથી નેમ શૈલ્પિક તથા ચેટકરણ કર્મયોગી બન્યા તેમ જૈનોએ નામરૂપ મોહ, અડુંમભતા વગેરેના નાશપૂર્વક કર્ત્વય કર્મોને અવશ્ય કરવાં જોઈએ. કર્ત્વ સર્વ કર્મો કરવાથી મન, વાણી, કાયાનો સહુપ્રોગ થાય છે અને આત્માની શુદ્ધિ થાય છે. અનેક શાસ્ત્રોત્તું અવગાહન કરવાથી અને અનેક રાનીઓનો સમાગમ કરવાથી કર્મયોગીની દશા પ્રાપ્ત થાય છે. હિંદુસ્થાનમાં પાશ્ચાત્ય કર્મયોગીઓની પેઠે જૈન કર્મયોગીઓ બહુલ પ્રમાણમાં પ્રગટાવવાની અત્યાત જરૂર છે. હિંદુસ્થાનમાં સર્વ ધર્મીઓ જે કર્મયોગીઓ બને તો હિંદુસ્થાનમાં જે જે શક્તિયોનો ઉદ્ધાર કરવાનો છે તે સહેલે બની શકે એમાં કંઈ શક્કા નથી. જ્ઞાન યોગીઓએ કર્મયોગીઓ બનતું જોઈએ અને હાનિકારક રીવાજોનો નાશ કરીને ભનુષ્યોને ઉન્નતિના પાયાપર અઠાવવા જોઈએ. દરેક જૈન ધ્યાવહારિક અને ધાર્મિક કેળવણી પરિપૂર્ણ લેની જોઈએ અને પદ્ધતાતું

जैनोपनिषद्.

३३

कर्मचारी भनी अनवुं ज्ञेधचे साती अन्या विना क्राई कर्मचारी भनी शक्तो नयी. जैनपुढोऱ्ये अने जैनस्थीओऱ्ये प्रक्षुनी आशारप सूत मानीने कर्मचारी भनी स्वाश्रयालंभी थाई स्वपरनी शक्तियो वधे अने अध्यात्मसाननी पूर्ण प्राप्ति थाय एवा उपाये अडी कर्मचारी भनवुं.

अधर्मनाशकाः

जैनाथी पापमुद्दि प्रगटे ते अधर्मकर्मी छे. जैनाथी वीतरागहेवनां आगमेपर अशक्ता प्रगटे ते अधर्म विचारो तथा अधर्माचारो जाणुवा. जैनागमेथी अने जैनधर्मकर्तव्यकर्मीयी विपरीत विचाराचारने अधर्म कथवामां आवे छे. गुहस्थ अने साहुने स्वाधिकारब्रष्ट करावनार अन, वयन अने कायानी प्रवृत्तिने अधर्म कडे छे. श्रुतधर्मथी अने चारित्रधर्मथी विपरीत प्रइप्पाने अधर्म कडेवामां आवे छे, जैनधर्मथी ने विपरीत धर्म छे ते अधर्म छे. हिंसादिविचाराचारने अधर्म कडेवामां आवे छे. जैनागमेथी ने अधर्मनी व्याख्या करवामां आवे छे, एवा अधर्मना ने विचारो अने आचारो छे तेनो नाश करवामां ने प्रवृत्ति करे छे ते जैनो छे. अधर्मथी विश्ववित्तमतुष्योनी पतित दशा थाय छे. अधर्मथी हुनियानो नाश थाय छे. हिंसा, असत्य, सत्य, व्यजियार, भासंभक्षण, भहिरापान, अप्रामाण्य, वैर, अभिमान, असात, निन्दा, काम, कौषल, कृप वगेरे हुरुष्णो छे ते अधर्म छे. अधर्म छे ते भोहरप छे, भाटे भोहरप अधर्मनो नाश कर्या विना गुहस्थी अने लागीआ आत्माना सानाहि युश्चा प्राप्त करवा शक्तिभानु थता नयी. अधर्मथी राजनो अने प्रजनो उद्ध थतो नयी. अधर्मथी क्राई देशनो उद्ध थयो नयी, थतो नयी अने भविष्यमां थयो नडि. रजेगुण्युथी अने तभेणुयुथी अधर्म थाय छे. आत्मवतुं सेवन करवुं ते अधर्म छे अने संवरतुं यथाशक्ति स्वाधिकारे सेवन करवुं ते धर्म छे. साहुओतुं अने साधीओतुं तथा आयार्योतुं रक्षणु करवुं ते धर्म छे. जैनसंघतुं रक्षणु करवुं ते धर्म छे. जैनागमेतुं रक्षणु करवुं ते धर्म छे. जैन धर्माल्यासीओतुं रक्षणु रक्षणु ते धर्म छे. जैनधर्मनो नाश थाय अवी क्राई प्रवृत्तिने. करवी करावनी तथा तेने अनुभोदी ते अधर्म छे. अधर्मनो नाश करवाथी जैनो जैनधर्मनो प्रयार करी शके छे. जैनधर्मनी रक्षा करवाथी जैनोनी उन्नति थाय छे. जैनधर्मतुं रक्षणु करवाथी जैनोतुं धर्म स्वयं रक्षणु करे छे. भाटे अतुर्विधजैनोये अधर्मनो नाश करवो.

ज्ञेय. अधर्मनो नाश करवामां सर्वजैनोंमे एकसरभो आत्मभोग आपवो ज्ञेय. जैनशासनी हेलना निन्दा क्राई करे तो तेनो प्रतीकार करवो ज्ञेय. जैनागमो अने जैनेतुं रक्षणु करवु. जैनधर्मनुं रक्षणु करवु ते धर्म छे. तेना खंडननी चेष्टा करनाराओनो यथाशक्ति रोध करवो ज्ञेय.

स्पर्धाशीलः

अन्य दर्शनीओथा जैनो स्पर्धाशील होय छे. ज्यां सुधी व्यवहार छे त्यां सुधी स्पर्धाशील स्वभाव राख्वो ज्ञेय, परंतु छर्ष्याशील स्वभाव न राख्वो ज्ञेय. स्पर्धा कर्त्ता विना क्राई वप्त अन्यधर्मीमा करतां आगण वधी शक्तातु नथी. श्रीऋषभहेवना समयथी प्रारंभीने जैनो परंपरामे याल्या आवे छे. छतां हाल जैनोनी संभ्या आशरे तेरलाख छे. त्यारे हिन्दुस्थानमा असे वर्ष लगभगथी आवेला भीस्तियोनी अहुवीक्ष लाखना आशरे संभ्या छे. भीस्तियोनी ऐतालीश करोडनी संभ्या छे. मुसलमानोनी चोनीस करोडना आशरे संभ्या छे. ऐद्दोनी अटतालीश करोडना आशरे संभ्या छे. हिन्दुओनी आवीश करोडना आशरे संभ्या छे. त्यारे जैनोनी तेर लाख. आ प्रभाणे अवलोकतां जैनोमे धर्मजनोनी संभ्यामां स्पर्धा करी नथी. साधुओमां हिन्दुओना अने ऐद्दोना तथा मुसलमानोना लाभानी संभ्यामां छे, त्यारे जैनोमां ऐ त्रणु हजार साधुओ ऐ त्रणु शीरकाना थधने छे. शारीरिक्यणमां जैनो करतां भीस्तियो, ऐद्दो वगेरे अणवान् छे. सत्ताभण तरीके हेष्ठाये तो हिन्दुओतुं राज्यसत्ताभण छे. मुसलमानोतुं राज्यसत्ताभण छे. भीस्तियोतुं राज्यसत्ताभण छे. ऐद्दोतुं राज्यसत्ताभण छे. लक्धमीनी दृष्टिये हेष्ठाये तो भीस्तियो, मुसलमानो अने ऐद्दोनी पासे अपार लक्ष्मी छे. संपर्यणातुं स्वत्रृप हेष्ठाये धीये तो जैनो करतां मुसलमान वगेरे डोमेमां विशेष हेष्ठाय छे. एकमहोमेनने डोध भारता जय तो अन्यमुसलमानो तुर्त भेगा थधने तेनी बहारे जय छे. एकभीस्तिने आगण यदाववामां अन्यभीस्तियो सारी भद्द आपी शके छे. उत्साहयणनी दृष्टिये हेष्ठाये तो जैनो करतां अन्यडोमेमां विशेष उत्साहयण हेष्ठाय छे. विद्यायण अने क्षात्रयणमां जैनडोम घरेपर अन्य डोमो. करतां धर्मी पाण्डण पढी गाइ छे. धर्मशब्दयणमां पछु ते क्राई रीते यडती हेष्ठाती नथी. आ रीते अनवातुं कारणु शुं? तो तेना उत्तरमां क्लेवातुं के, जैनोमां स्पर्धा करवानो उत्साह भिलकुल मंद पडी

गये छे अने आ प्रभाषे जे चालशे तो जैनकामनो सर्व रीते नाश थवानो अने तेतुं पाप तेना आगेवान संधीओ, आचार्यो अने साधुओने लागवातुं. पारसी डोम हवे स्पर्धीमां सत्तायण, क्षात्रयण, व्यार-पारयण अने विद्याभृणी आगण वधे छे. जैनकाम परस्पर इरकाओना झगडा कर्या करे छे अने तेथी तेतुं बण परस्परमां लडवाथी क्षीणु थर्द गयुं छे. आ प्रभाषे जैनोना स्थिति थवातुं कारणु खरेखर तेओ अरु रहेवा लाग्या ते छे, अने अरु अति द्यातुं परिण्याम छे. जैनो व्यापारी होवाथी धनमां भग्न थया अने तेथी तेओ भोंजशोभमां भस्त थया अने तेतुं परिण्याम ए आव्युं के, क्षात्रयण, विद्यायण, शरीरयणी अष्ट थया. साधुओओ पण तेमनी व्यावहारिकउन्नतिथी पतितदशा थाय छे, ए तरक न अवदेकतां एकला निवृत्तिमार्गने पोषवा तरक लक्ष्य आप्यु. जैनकाम धनलोगाथी विद्याविहीन थध अने तेथा ते सर्व प्रकारना वणेथी क्षीणु थवा लाग्या. तेमा निवृत्तिमार्गना उपासक साधुओने ते दोष आपी शक्तय तेम नथी, कारणु के साधुओओ विद्यायण, क्षात्रयण, व्यापारयण प्राप्त, करतां अंतराय कर्यो नथी. जैनो भोंजला थया, विद्या रडित थया, तेमनी आज्ञविका प्रवृत्तिनां साधनेमां संतोष भानी लीघो तेथी तेओ सर्व प्रकारनां व्यावहारिकयोगाथी क्षीणु थता गया. हवे जैनोअ स्वधर्मीमां सर्व प्रकारनी शक्तियेने घीलवली ज्ञेधये. क्षीणु थयेली शक्तियेने पाठी भेळववा प्रयत्न करवा ज्ञेधये. धर्मयणनी साये रहीने स्पर्धीथी अन्यणेना प्राप्त करवां ज्ञेधये.

स्वास्तित्वसंरक्षकाः

जैनोनां आगमो, जैनोनी साध्या, जैनोनां भंहिरो छलाहि जैनोतुं स्वत्व छे, सर्वस्व छे, तेतुं परपराए अस्तित्व याल्या करे एवी प्रवृत्तियोवडे स्वास्तित्व संरक्षक जैनो वर्ते छे. धर्म श्रद्धावंत जैनो पर जैनोनां तीर्थो करेनो आधार छे. जैनोनी विद्या, शक्ति, क्षात्र शक्ति, धन शक्ति, प्रज्ञ शक्ति वगेरे शक्तियेवडे स्वास्तित्व संरक्षा थाय छे. हालना जैनोनी पाठ्य लाभो गाया. जैनो वधता नय एवा उपायो वडे जैनोतुं स्वास्तित्व संरक्षणु ज्ञेधये. जैनोअ हताश न भनवुं ज्ञेधये. यडती पडतीतुं यड सदाकाल सर्व डोमोपर प्रवर्त्या करे छे. जैनोनी हवे सर्व व्याप्तमां प्रगति थवानो जुहसो. जैनोमां प्रकटवा लाजयो छे अने तेतुं इण प्रगद्या विना रहेवातुं नथी. कारणु के कार्यनी पूर्वे उद्यना प्रथम विचारो प्रकटे छे. ज्यां

વિશેષ ખળના જુસ્તસામાં વિચારો પ્રકટે છે તાં કાર્યની સિદ્ધ થયા કરે છે. ડેટલાક ડેણવાયલા જૈનો નાસ્તિક બને છે તેઓને ધર્મભાં સિદ્ધ કરવાના અને તેઓને ધર્મની પ્રગતિ કરવાના ઉપાયો લેવરાવવા જોઈએ. જેઓ સ્વાસ્તિત્વ સંરક્ષણની ધર્માબાળાઓ છે તેઓએ યુદ્ધાની, સાધુઓની સેવા કરવી જોઈએ. સાધુઓની આંતરડીના આશીર્વાદ લીધાથી પોતાની પાછળ મહાપુરુષો પ્રકટે છે. સાધુઓની આંતરડી કંકળાવવાથી હુનિયામાં સ્વાસ્તિત્વ સંરક્ષણ થઈ શક્તિ નથી. માટે જૈનોએ જૈનસાધુઓની તથા સાધુઓની ભક્તિ કરવી જોઈએ. જૈનોએ સ્વાસ્તિત્વ સંરક્ષણ માટે દરરોજ ધાર્મિક શુભ કર્મો કરવાં જોઈએ. દરરોજ નિયમિત શરીરને કસરત કરવી. દરરોજ સહિવચ્ચારો ભીલે એવાં પુસ્તકો વાચવાં. પોતાની પાછળ પોતાના કરતાં વિશેષ ગુણી જૈનો પ્રકટે એવા ઉપાયોપૂર્વક યોગ્ય પ્રવત્તિયો કરવી. પોતાની પાછળ બળવાનું જૈનધર્મ પાળનારા જૈનો પ્રકટે એવાં જૈનધર્મયુક્તિને મદ્દ કરવી. જૈનધર્મના સાતા મહાવિદાન જૈનો પ્રગતે એવા સર્વપ્રથમેને આચારભાં મૂકી બતાવવા. જે જૈનો પોતાની પાછળ પોતાના કરતાં લાઘો જૈનને પ્રકટાવવા જરૂરાદભાં મંદ પડી ગયા છે તેવા શુષ્ટ નિર્ધિલ ઉદ્દાસીન જૈનોથી જૈનોની પડતીનો પ્રારંભ થાય છે. સ્વાસ્તિત્વસંરક્ષણપ્રવત્તિયોભાં જે જે રાગહેસાહિ થાય છે તેનાથી શુભ ધરાદાના લીધે જૈનશાસનની ભક્તિની વૃદ્ધિ થાય છે. જેઓ સુરિમંત્રના ધ્યાની એવા ધર્માચારોની સેવા ભક્તિ કરે છે એવા જૈનોના કુળોનો ક્ષય થતો નથી તેમજ તેઓ નવા જૈનોનો પ્રાહુર્બાવ કરી શકે છે. અંગ્રેજે, જર્મનો, આપાનીજો સ્વાસ્તિત્વની સંરક્ષણ માટે રક્તાનું પાણી થાય એવા પ્રયત્નો કરી રહ્યા છે. જે ક્રોમભાં દરરોજ કાયાની શક્તિયો ભીલવાના માટે સુષ્પ્યતયા લક્ષ્ય હેવામાં આવે છે તે ક્રોમની પરપરાએ ઉનન્તિ થયા કરે છે. અદ્યાર્થની પૂર્ણ રક્ષા કરનારા યુવકોનાં જે ક્રોમભાં લખ થાય છે તે ક્રોમનો નાશ થતો નથી. જૈનકોએ આ ભાપતમભાં આત્મભોગ આપીને ખરી કાળજી ધારણું કરવી જોઈએ. નગુણી અને નથુરી જે ક્રોમ બને છે તે ક્ષીણું થાય છે. જેના માયે યુર છે અને જે કર્મ ઉપકારને જાણે છે તે ક્રોમ જીવતી રહે છે. જૈનો સ્વાસ્તિત્વ સંરક્ષણ કરનારા બને.

પ્રશસ્યરાગાદિસંયુતા:

પ્રશસ્યરાગ, પ્રશસ્યદ્વૈષ, પ્રશસ્ય ક્રોધમાનલોલમાયા, અદ્ધા, ભાતુભાત, પરો-
પકાર, ડેણવણ્ણી વળેરેની દાધિ, સાર્વજનિક કર્મ પ્રવત્તિ આદિ યુક્ત જૈનો હોય

જૈનાપનિયદ્રા

૩૫

છે. રાગદેષનો એકદમ નાશ થવાનો નથી. અશુભ રાગ અને અશુભ દેષને શુભ રાગ અને શુભ દેષના ઇપમાં પરિણમવાવવા જોઈએ. પ્રેમ અને અદ્ધા એ શુણુને તો દરેક જૈન જૈનધર્મ અંગીકાર કરતાં પૂર્વે અવલાંબવા જોઈએ. પ્રેમ અને અદ્ધા વિના આત્મજીવનની પ્રગતિ થતી નથી. જૈનામાં પ્રેમ અને અદ્ધા નથી, તે દેવયુદ્ધર્મની આરાધના કરી શકતો નથી તથા પ્રામાણ્યજીવનને પ્રાપ્ત કરી શકતો નથી. દરેક કર્તવ્યમાં પ્રેમઅદ્ધાની અત્યંત જરૂર પડે છે. વ્યાવહારિક બાખોમાં પ્રેમી અદ્ધાણુ વર્ગ, જ્યા મેળવી શકે છે. પ્રભુની પ્રાપ્તિ માટે પ્રથમ પ્રેમ અને અદ્ધાની જરૂર પડે છે. શુભકર્મોપર પ્રેમ પ્રશસ્ય રાગ અને દુર્ઘણી પર દ્રેષ થવાથી અશુભ વાસનાઓનો ક્ષય કરી ઉત્તમ મન અનાચી શકાય છે. અનમાં શોક, દીનતા, વૈર અને હૃદયના વિચારોને ન પ્રકટાવવા જોઈએ. ગમે તેવા અશુભ સંયોગમાં દેવયુદ્ધર્મનો પ્રેમ અને તેની અદ્ધાથી મનને ભરી દેવું અને વિષયો પર કાણુ મેળવવો એ ખાસ જૈનોનું કર્તવ્ય છે. પ્રેમ, અદ્ધા, ઉત્સાહ, સંપ વગેરે દેવિશુણુની ક્ષણોક્ષણે આરાધના કરવી જોઈએ. પ્રેમ, અદ્ધા અને એકયથી અધ્યાત્મશક્તિયોને મેળવી શકાય છે. માટે જૈનોએ આત્માની શક્તિ ભીલવવા ઉપર્યુક્ત શુણુને ભીલવવા જોઈએ. સર્વ શક્તિયોનું ધામ આત્મા છે. શરીરમાં રહેલો આત્મા છે તેજ પ્રેમઅદ્ધા વડે આરાધવાથી પરમાત્મા બને છે, માટે ગમે તે કાલે, ગમે તે સ્થળે પ્રેમખણે આત્માની આરાધના કરવી. આત્માની પૂર્ણ અદ્ધા બળથી અને પૂર્ણ પ્રેમ બળથી આરાધના કરતાં સર્વ પ્રકારની શુભેચ્છાઓનાં કણ પ્રગટાવી શકાય છે. આત્મા, અનંતરાનાદિશક્તિયોનો ભહાસાગર છે તેથી આત્માનિભિસુધ્યાત્મિકાની કરીને આત્માની શક્તિયોને બાલભાગ વાપરને જૈનશાસનની ઉનની કરવી. વીતરાગદશાની પૂર્વે પ્રશસ્યરાગની અત્યંત જરૂર છે. જૈન પ્રશસ્યરાગ અને પ્રશસ્યદેષનો ત્યાગ કરીને એકદમ વીતરાગ થવા ધર્મચ્છે છે તે ઉભ્ય બ્રહ્મ થાય છે. કારણુ કે અપ્રશસ્યરાગદેષયોગે તે ધર્મને સેવવાથી બધ્ય અને છે, અને વીતરાગદશાને તે પ્રાપ્ત કરી શકતો નથી. માટે વીતરાગ દશાની યોગ્યતા ન આવે ત્યા સુધી જૈનોએ પ્રશસ્યરાગદેષયથી દેવયુદ્ધ ધર્મની આરાધના કરવી. પૂર્ણ શુદ્ધ પ્રેમ ભીલયા પદ્માત્મ વીતરાગ દશામાં પ્રવેશ કરી શકાય છે. જૈનસાધુઓ પર પૂર્ણ પ્રેમ પ્રગટાવવો જોઈએ. જૈનધર્મના સિદ્ધાંતોને પૂર્ણ પ્રેમથી સિક્ક કરવા જોઈએ. જૈનાગમો પર, જૈન શાસ્ત્રોપર પૂર્ણ રાગ ધારણુ કરવાથી જૈનાગમોની ભક્તિ થાય છે અને તેથી દુનિયાનો ઉદ્ધાર કરવામાં આત્મજોગ આપી શકાય છે માટે જૈનોએ પ્રશસ્યરાગદિશુદ્ધ યુક્ત બનવું જોઈએ.

નિત્યનૈમિત્તિકબ્યવહારધર્મપ્રગતિપરાયણા:

નિત્યબ્યવહારધર્મપ્રગતિ અને નૈમિત્તિકબ્યવહારધર્મપ્રગતિમાં તત્ત્વર થનાર ગૃહસ્થ જૈનો છે. કલમ, કડકી અને બરછી વિના બ્યવહાર ધર્મને સત્તાની શક્તિ તેમ નથી. આ કલિકલમાં ચોથાઆરાની પેઠ વર્તાં વામાં આવે તો અન્ય પ્રનામો સામે જીવનું પણ રહી શકાય તેમ નથી. હાલ અનેક પ્રનામો વિષે એક ભીજાને દાખી હેવાની અને જીવનના હડકને દુંધી કેવાની ચળવળ ચાલી રહી છે. એવી પરિસ્થિતિમાં જેઓ પણ જેવું નૈસ-ગિંક જીવન ફૂકા અન્યોના શરીરોના પોષણ માટે ગાળે છે તેઓ દુનિયામાં જીવવાને લાયક નથી. બ્યાવહારિકશક્તિયેવિના ધાર્મિકજીવન પણ આ કાળમાં રહી શકે તેમ નથી એમ ચોક્કસ માનવું. સર્વ પ્રકારની શક્તિયો મેળવી જરૂર ભાગ એંશઆરામના વાયરે ન જાઓ. અન્યોથી ડરી જઈને ભાયકં-ગલા બની જવાથી ધાર્મિકજીવનનો અંત આવે છે. આ કાળમાં ચાણુકય નીતિ અને શુક્લનીતિ કરતાં પણ વિરોધ નિત્યોનકે નિત્યનૈમિત્તિક બ્યાવહારિકધર્મપ્રગતિયો. કરવી જોઈએ. જૈન સાધુઓએ પણ આ કાલમાં ચોથા આરામાં આચરવા લાયક કેટલીક સૂત્રની કિયાઓનો અને પાંચાં આરામાં પણ આવા કાટકટીના પ્રસંગે આચરવા લાયક ધાર્મિક કિયાઓનો ઘ્યાલ ફરવો જોઈએ, અને જમાનામાં સાધુ વર્ગનું સ્વાસ્તિત્વ સંરક્ષી શકાય એવી નિયમ નૈમિત્તિક બ્યાવહારિક ધર્મ પ્રગતિયો કરવી જોઈએ. આ જમાનામાં જે ભાવિ પર વિશ્વાસ રાખી એસી રહેશે તેની ખૂબી દશા થવાની, આં જમાનામાં સાધુઓએ, આચાર્યોએ સર્વધર્મના સૈદ્ધાંતિક તથા ઔતિહાસિક અન્યોનો પરિપૂર્ણ અભ્યાસ કરવો જોઈએ, અને જૈન ધર્મભ્રાની વૃદ્ધિ થાય એવા સર્વ પ્રકારના ઉપાયો લેવા જોઈએ. જે જે કાલે નૈમિત્તિક ધર્મ પ્રગતિ કર કાર્યો કરવાની આવશ્યકતા થાય તે તે કાલે સંધયલાહિથી તેવાં કાર્યો ફરવાં જોઈએ. જૈનધર્મભ્રાનો જો ઉપયુક્ત હિતશિક્ષાઓને હશી કાઢશે તો ભવિષ્યમાં તેઓ દાસ્યજીવનથી જીવવાના અવિકારી બનશે. હજ જૈનોતું ભવિષ્ય જૈનાના હસ્તમાં છે. ધર્મપ્રગતિકરનિત્યનૈમિત્તિક કર્મો કરવામાં પ્રાણુની દૃષ્ટાર રાખવાથી પાછું પડવાતું થશે. માટે જૈનોએ બ્યાવહારિક ધર્મ તથા ધર્મ ભ્રાને સુષ્પ ભાની ધર્મને કાઢ ત્યાગ ન કરવો જોઈએ. એક જૈનને એક તીર્થની પેઠ આ કાલમાં ચાહવામાં આવશે તો આ કાલમાં અન્ય ક્રોਮાની ઉરિશાધમાં ફૂકા જીવી શકશે. આ બાધતને કોઈ હશી કાઢશે.

જૈનાધિનિપદ.

૩૬

તો જિનશાસનદ્રાહનું પાય વહેશી લેશો. અન્ય કોમો કરતાં જૈનો સર્વશક્તિયોમાં પથાત છે માટે હવે તેઓએ નિત્યનૈમિત્તિકધર્મપ્રગતિકરકયોમાં ધન, સત્તા, મન, વાણી, કાચા, અને આત્માનું અર્પણ કરવું જોઈએ. જે જૈન એવા અર્પણું શાંકાશીલ રહેશે અને કુતર્ડી કરશે તે જૈન ધર્મનો નાશ કરનાર બનશે. મોહ, ભ્ય, સ્વાર્થ વોરેનો ત્યાગ કરીને નિત્ય નૈમિત્તિક ધર્મ પ્રગતિ કરનાર પ્રવાતિયોમાં યાહેનું કરીને જૈનોએ લુકાવું જોઈએ. તેમાં ભ્ય, શાંકા, હૈન્ય અને અવવાની છંછાનો પણ ત્યાગ કરવો જોઈએ.

સ્વધર્મકર્મપ્રવાતિષુ નિર્ભયાઃ

જૈનો સ્વધર્મકર્મપ્રવાતિયોમાં નિર્ભય હોય છે. સ્વાતિની ઉભાતિ કરવી એ સ્વધર્મ છે. જૈનધર્મ એ સ્વધર્મ છે. રાનદર્શનચારિત્રની પ્રાપ્તિ કરવી એ સ્વધર્મ છે. સ્વશાર્થપર જે જે કર્તાબ્યકારો કરવાની ઇરજ આવેલી હોય તે સ્વધર્મ છે. અન્યજીવોની સ્વાધિકારે રક્ષા કરવી એ સ્વધર્મ છે. દેશની સેવા કરવી એ સ્વધર્મ છે. સાતક્ષેત્રાની રક્ષા કરી પુષ્ટિ કરવી તે સ્વધર્મ છે. સાધુઓની સાધુઓએની રક્ષા કરવી એ સ્વધર્મ છે. સ્વધર્મ કર્મપ્રવાતિયોરાં જે જો શરીર પ્રાણુને નાશ થાય તેનો અંશમાત્ર ભ્ય રાખ્તા નથી તેઓ દુનિયારાં સ્વધર્મની રક્ષા કરી શકે છે. કોઈપણ જાતનો ભ્ય ધારવાથી કર્તાબ્યપ્રવાતિયોરાં આત્મશક્તિ ભીલતી નથી. ભ્યથી પરતંત્રતા પ્રાપ્ત થાય છે અને નિર્ભયતાથી આત્મસ્વાતંત્ર્ય પ્રાપ્ત થાય છે. સિંહ મુલુને મિષ્ટ ગણે છે, પરંતુ લીહાને પસંદ કરશે નથી. તેમ જૈનોએ ભ્યનો ત્યાગ કરીને નિર્ભય બની ધર્મકર્મની પ્રવાતિયો કરવી જોઈએ. ધર્મસ્વાતંત્ર્ય પ્રાપ્ત કરવાને માટે સામો ફાલ આવીને ઉંબો રહેશો દેખાતો હોય તો પણ ભ્ય ન ધારવો જોઈએ. જે કોમ ભ્યથીલ છે તે મહાપરાહીપુરુષોને પ્રટકાલી શકી નથી. નિર્ભયદશાચ્ચ. સાંસારિકજીવન તથા ધાર્મિકજીવન શુલ્કરીને ધર્મકર્મપ્રવાતિયોમાં પ્રવાત થવું જોઈએ. જ્યારથી જૈન કોમ સાંસારિક ધાર્મિક કાર્યોમાં ભ્યઘૃતિને ધારણ કરવા લાગી ત્યારથી તે ધર્મશર, ધર્મશર, દાનશર પુરુષોને શુલ્કરીની આવી છે. હવે જૈનકોમે નિર્ભયપણે સર્વ ધાર્મિક પ્રવાતિયો કરીને દુનિયામાં સત્તામ અમર કરવું જોઈએ. જૈન કોમે નિર્ભય બનવું જોઈએ. જેઓ ભ્યથીલ રહે છે તેનો વંશની પરંપરામાં ડરકુભિયાં જેવા ભીકણ પુરુષોનો ઉત્પાદ થાય છે. જૈનો !૧! ! હવે ભ્ય, કાયરં

તાનો ત્યાગ કરી નિર્ભય બનો. સર્વ પ્રકારના ભયને કચ્છી નાખો. નિર્ભય વિશ્વારોવડે આત્માને પોંચો. સર્વધર્મકર્મપ્રવાતિયેને નિર્ભયતાથી સેવો. ભય છે તે નરક છે અને નિર્ભયતા છે તે સ્વર્ગ છે. તમારા આત્માનો કોઈ નાશ કરે તેમ નથી માટે ધર્મકર્મપ્રવાતિયોમાં કોઈના જરા માત્ર ભય ગણો નહીં. જૈનો ભય ગણોછો. તે શરીર, પ્રાણ, ધન્યિએ. તમારાં નથી અને તમો પોતે આત્મા તો નિર્ભય છો. આત્માની અનંતશક્તિ છે. તમારા આત્માનો વિશ્વાસ રાખો. સર્વ પ્રકારની ઉનનિ કરતારાં કાયોને તમારી દ્વરા સમજ સેવો. તેમાં હન્દરો વિદ્ધા અવે, હન્દરો પ્રતિપક્ષીએ ઉભા થાય તોપણું ડરો નહીં. તમારા શરીરનો નાશ થતાં પણ તમે અમર રહેવાના છો. એવું મનમાં નિશ્ચય માનીને ધર્મકર્મપ્રવાતિયોમાં પ્રવત્ત થાયો. ધર્મના બળવડે તમો નિર્ભય બની વિશ્વમાં જૈનકોમનું અસ્તિત્વ સંરક્ષે. જૈનધર્મના જીવનથી જીવવાતું ધ્યાયો. જૈનધર્મજીવનથી બ્રહ્મ થથ જીવવા કરતાં ભરણું ધ્યાયો. જૈનધર્મની આરાધના કરવામાં શરીરમાં રહેલા આત્માને પ્રથમ દેખો. જેટલા ધર્મો છે તે સર્વેતું કેન્દ્રસ્થાન ખરેખર શરીરમાં રહેલ આત્મા છે. આત્મા એજ જૈન છે. જેણે આત્માને અનેકાન્તપણે ઓળખ્યો છે અને આત્માના કાયું નીચે મનને રાખ્યું છે તે નિર્ભય જૈન બનીને હન્દરો લાખો મનુષ્યોને જૈન બનાવી શકે છે. શરીરમાં રહેલો આત્મા અમર-નિર્ભય છે તે માટે તમો આત્માની ઉપાસના કરો અને આત્માની શક્તિયો ઘીલવીને દુનિયાના મનુષ્યોને સસ્ય નિર્ભય બનાવો.

પુરુષાર્થપરાયણા:

જેણોએ આત્માની શક્તિયોનો અનુભવ કર્યો છે તેવા જૈનો પુરુષાર્થ પરાયણું હોય છે. પુરુષાર્થ-ઉદ્ઘમમાં તત્ત્વ એવા જૈનો અન્ય લોકોની સ્પન્ધાં ટકી શકે છે. પુરુષાર્થ કર્યા વિના સ્વર્ગ અને સુક્ષ્મિની પ્રાપ્તિ થતી નથી. જેનામાં પુરુષાર્થ નથી તે દુનિયામાં એક ગરીબપણું કરતાં પણ વિશેષ દ્વારાન છે. પુરુષાર્થને સ્કેનરીને જૈનધર્મદુંચ્ચે. તમારી પૂર્ણકાળની ઝાડોઝલાલીને પાણી મેળવો. જેણો મોઝમજામાં, વિષમજોગમાં આસક્ત થયા છે તેમીં આત્મશક્તિયો મેળવવા માટે તથા આસુરીશક્તિયો સામે સુદૂર કરવા પુરુષાર્થ સ્કેનરી શકતા નથી. જે દેશમાં જે કોમ મોંઝલી થાય છે તે પતિત થાય છે એમ અનેક ધર્તિહાસોથી સિદ્ધ થાય છે માટે આત્મશક્તિ વગેરે પશુપતિયોનો લાગ કરીને જૈનકોમે આત્માનો વિશ્વાસ ધારણું કરી

જૈનોપનિષદ્.

૪૧

પુરુષાર્� કરવો જોઈએ. જૈનાગમોનો પુરુષાર્થ બળે સર્વત્ર પ્રચાર કરો. જૈનાગમો એજ સ્વધન છે એમ સમજુને તેનાં સહ્યોનો વિશ્વમાં પ્રચાર કરો. ગુરુ અંહિરોના ઉદ્ધાર કરો. કોઈની આગળ દીનતા કરો નહીં. તમારો આત્મા તમને સર્વપ્રકારની સહાય આપવા તૈયાર છે, ઇકત તમારે અંત: કરણુંની લાગણી પૂર્વક પુરુષાર્થ સ્ફોરવાની જરૂર છે. પુરુષાર્થ સ્ફોરવ્યા વિના કોઈપણ ધર્મની આરાધના થતી નથી. પુરુષાર્થ વિના પુરુષ ગણવાની ચોઝતા પ્રાપ્ત થવાની નથી. પુરુષાર્થજ તમારા આત્માતું જ્વલંત સ્વરૂપ છે માટે પુરુષાર્થ પ્રકારીને સર્વાચાલયકર્મપ્રવૃત્તિયોમાં નિર્ભયપણે પ્રવત્ત થાઓ. પાશ્વત્ય લોકો પુરુષાર્થ સ્ફોરવીને આગળ વધ્યા છે તો આર્થજૈનોએ પુરુષાર્થ સ્ફોરવીને ધર્મકર્મ તથા વ્યાવહારિક ચોઝ કર્મો કરવામાં શા માટે પાણ પડખું જોઈએ? કર્મભાં લખ્યું હશે એમ માની કેમ એસી રહેખું જોઈએ? જૈનોએ ભાવીભાવ અને કર્મના નામે આલસ્યને માન આપી આજસ્યદી ધંધું બોધું છે. કુમારપાલ, હેમચંદ, સંપત્તિ રાજ, આર્થરકિત, વસ્તુપાલ, તેજપાલ, વિમલશાહ, શ્રીનીરપ્રભુ, હરિભદ્રસ્સરિ વગેરેના પુરુષાર્થતું સરમણું કરો અને હને જણો ઉડો. પુરુષાર્થ અવલંઘો—જૈન કોમનો અને જૈન ધર્મનો ઉદ્ધાર કરો. પુરુષાર્થ આદરો. કોઈ વિધનો આવતાં શુભ કાર્યોને ન મૂકો. છેવટે તમારો આત્મા પરમાત્માને તમને સહાય કરતો હેખાવાનો. આ લખેલી હિત શિક્ષાપર પૂર્ણ શ્રદ્ધા ધારણ કરો. યુદ્ધતું બીગલ વાગતાં બાયલાને પણ કદાય શર ચઢે છે તો ક્ષાત્ર વંશમાંથી ઉતરી આવેલી જૈન કોમને ઉપરોક્ષ હૃપ બીગલ કુંકાતાં શરતા પ્રગટે એની આશિષ છે. જૈનોપનિષદ્હિત જૈનોદ્યસૂત્રોને જે જૈનો દરરોજ ચાદ કરે છે તેઓની બાલની ઉનનિ થાય છે. તેઓ મહાનું અને છે અને આરામાની ગુણાદ્યક્તિએને પ્રાપ્ત કરી ત્રીજ ભવનું અવસ્થ સુકૃતપદ પ્રાપ્ત કરે છે એ નિશ્ચય છે. જે જૈનો જૈનગીતા અને જૈનોપનિષદ્હિતો પાઠ કરે છે તેઓના પર યુરેવની આશિષ છે કે તેઓ સર્વપ્રકારે સુખી થવાના. તથા તેઓ સર્વ ભંગલોને પ્રાપ્ત કરવાના. યુરે શિક્ષા ત્રણ કાલમાં સર્વ પ્રકારની શુભોન્નતિ કરનારી થાઓ. ઇત્યેવં જી દ શાન્તિ:

સં. ૧૯૭૩ નેટ સુદ્દ ૧૦ થા પ્રારંભ સં. ૧૯૭૩ અપાડ સુદ્દ સાતમે પૂણે વિવેચન.

પ્રથાપુર,
દો. બુદ્ધિસાગરસ્સુરિ.

શ્રી અધ્યાત્મજ્ઞાનપ્રસારક મંડળ.

(સ્થાપન-જ્ઞાનપદ્યમી-વીર સંબંધે ૨૪૩૫)

જે તમારે તત્ત્વજ્ઞાનના ઉત્તમ સિદ્ધાંતો, સરલ અને પ્રિય શૈલીમાં સમજવા હોય અને પોતાનું હદ્દ્ય નિર્ભળ બનાવવું હોય, તો મંડળ તરફથી પ્રગટ થયેલા:

શ્રીમહ લુદ્ધિસાગરજી અન્યમાળા અવસ્થા વાંચો.

મજુદુર અન્યમાળામાં નીચેના અન્યો પ્રગટ થયેલ છે, જે વાચી, મનન કરી, તમારા આત્માને ઉત્ત્ય શ્રેષ્ઠિએ બદાવો. ઉત્તમ અન્યો એજ અપૂર્વ સત્તસંગ છે. અચીત આ અન્યોના મનનથી ધારું જાણુવા અને મેળવવા પામણો—ગુરુશ્રીની દેખનશૈલી—માધ્યરથદિષ્ટિવાળા હોનાથી, દ્રેક ધર્માવલાંધીએ. તેને પ્રેમપૂર્વક વાચે છે. દ્રેક અન્યોમાં અધ્યાત્મજ્ઞાન અને તત્ત્વજ્ઞાન સંખ્યા વિવેચન છે.

વૈરાગ્ય, ઉપહેંશક, અને ભોધક, પહો-ભજનો—તે તે વિષયમાં લીનતા કરી નાણે છે. દ્રેક પહોનો સાર વિચારણીય છે. અનેકાન્તદિષ્ટિ, હદ્દની વિશાળતાપૂર્વક અને પ્રિય તથા પથ્યવાણીથી વાચકોનાં હદ્દને ઉત્તમ કરી શકાય છે અને તે સુજલ આ અન્યો છે.

માત્ર વાચકોના હિતાર્થે, ઉદાર ગૃહસ્થોની સહાય વડે,—કોઈપણ અન્ય પ્રકાશકમંડળ કરતાં-ઓછામાં ઓછા કિંમત રાખવાની પહેલ આ મંડળો કરી છે-ઓછા કિંમત છતાં છપાઈ-કાગળ-અંધાઈ વગેરે કામ ચુંદર થાય છે, તહુપરંતુ વધુ પ્રચારાર્થ-પ્રભાવના, વિદ્યાર્થીઓને છનામ અને જેટ આપનાર ભાટે વધુ નકલો મંગાવનારને (શીલીકમાં હોય તો) અની શક્તિ ઓછા કિંમતે આપવામાં આવે છે.

જેઓને પ્રગટ થઈ ચુકેલા અને થવાના અન્યો પૈકી, કોઈપણ અન્યો પોતાના સુરણ્ણી કે સ્નેહી અને ઉપકારીઓના સમરણાર્થે, પ્રગટ કરવાને ઘરછા હોય તેમને તે સુજલ મંડળ સગવડ કરી આપે છે.

શ્રીમહ લુદ્ધિસાગરજી અન્યમાળામાં પ્રગટ થયેલા અન્યો.

૧. ક ભજન સંશોધ ભાગ ૧ લો.	...	૫૪	૨૦૦	૦-૮-૦
૧. અધ્યાત્મ વ્યાખ્યાનમાળા.	૨૦૬	૦-૪-૦
૨. ભજનસંશોધ ભાગ ૨ લો....	૩૩૬	૦-૮-૦
૩. ભજનસંશોધ ભાગ ૩ લો....	૨૧૫	૦-૮-૦
૪. સમાવિ શતકમૂ...	૩૪૦	૦-૮-૦

५. अतुक्षव पचियसी.	२४८	०-८-०
६. आत्मपटीप.	३१५	०-८-०
७. अजनसंअङ्ग भाग ४ थो.	३०४	०-८-०
८. परमात्मदर्शन.	४३२	०-१२-०
९. परमामज्जयेति.	५००	०-१२-०
१०. तत्त्वधिकु.	२३०	०-४-०
११. शुणातुराग. (आवृति भीष)	२४	०-१-०
१२-१३. अजनसंअङ्ग भाग ५ मेा तथा शानदीपिका.	१५०	०-६-०
१४. तीर्थयात्रातुं विमान. (आवृति भीष)	६४	०-१-०	
१५. अध्यात्म अजनसंअङ्ग	१६०	०-६-०
१६. गुह्योध...	१७२	०-४-०
१७. तत्त्वगानदीपिका.	१२४	०-६-०
१८. गङ्गुलीसंअङ्ग.	११२	०-३-०
१९-२०. आवक्षर्मस्वरूप भाग १-२ (आवृति त्रीष)	...	४०-४०	०-१-०		
२१. अजन पद संअङ्ग भाग ६ थो.	२०८	०-१२-०	
२२. वयनामृत.	३०८	०-१४-०
२३. शैगदीपक.	२६८	०-१४-०
२४. जैन ऐतिहासिक रासभाणी.	४०८	१-०-०	
२५. आनन्दन पदसंअङ्ग भावार्थसंक्षिप्त.	८०८	२-०-०	
२६. अध्यात्म शान्ति. (आवृति भीष).	१३२	०-३-०	
२७. काव्यसंअङ्ग भाग ७ मेा.	१५६	०-८-०	
२८. जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति.	...	६६	०-२-०		
२९. कुमारपाल चरित्र (इंदी)	२८७	०-६-०	
३०. थी ३४. सुखसागर गुह्यगीता.	३००	०-४-०	
३१. पद्मद्वय विचार.	२४०	०-४-०	
३२. विज्ञपुर वृत्तांत.	६०	०-४-०	
३३. साधरभूति काव्य	१५६	०-६-०	
३४. विज्ञपुरालि.	११०	०-५-०	
३५-३६-३७. जैनगच्छमत प्रथम. संघप्रगति. जैनगीता.	१-०-०	१-०-०	
३८. जैन धार्मिकामा लेख संअङ्ग.	१-०-०	
३९. जैनगीति.	
४०. जैनगीति.	
४१. जैनगीति.	

नीतेन्ना अन्थो ग्रेसमां छपाय छे.

(१) कुर्याण (२) अजनपदसंअङ्ग भाग ८ मेा. (३) गदसंअङ्ग. (४-५)
श्रीभृहेवयंद्रश्च श्रीव्यसंअङ्ग. प्रथमभाग-हितीयलाग.

पञ्चव्यवहार-सुंभाष-यंभागली. व्यवस्थापक-अध्यात्म शानप्रसा-
दक्षमंडेश्च जोग करवो.

